जीवन चरित्र एवं दिव्य लीलायें

पूज्य दादा भगवान

क्रमांक	विषय	पृं0सं0
1.	दादा भगवान का जीवन चरित्र एवं दिव्य लीलायें	1
2.	व्यावहारिक जीवन	5
3.	प्रकृति का बदलाव	8
4.	दादा भगवान के ज्ञान पूर्व जीवन का वृतान्त	11
5.	दादा भगवान का रिफयूजीस को ज्ञान देना	14
6.	पॉल ब्रुंटन से मुलाकात	16
7.	दादा भगवान का लाली और ज्ञानी दादी को ज्ञान देना	18
8.	पटियाला की रानी को ज्ञान सुनाना	20
9.	भगवान दादा का **T.B.** लाली लड़की को ज्ञान देना	22
10.	भगवान दादा का उदयपुर आना और ज्ञान प्रगट करना	23
11.	उदयपुर में धोबिन को ज्ञान	27
12.	दादा भगवान का निश्इच्छापन :–	28
13.	भगवान दादा की इच्छा के दुश्मन	33
14.	"इच्छा काटना"	34
15.	भगवान दादा की कीर्ति से दूर रहना	35
16.	"दादा भगवान सदैव गम्भीरता व मौन में रहते थे"	37
17.	"भगवान दादा की निर्भयता और नम्रता"	39
18.	"भगवान दादा की निष्कामता"	43
19.	"दादा भगवान की निर्मानता"	46
20.	भगवान दादा के पूर्ण निष्कामता के उदाहरण"	49
21.	"भगवान दादा का लिंक ध्यान जोड़कर ज्ञान देना"	51
22.	दादा भगवान की शरीर की पुत्री– गीता भगवान	52
23.	"जसी बुटानी को ज्ञान देना"	53
24.	"दादा भगवान का बड़ी उम्र वालों से प्रेम"	54
25.	"चन्दनी को ज्ञान"	56

क्रमांक	विषय	पृं0सं0
26.	"भगवान दादा का राजा (लखनऊ) को ज्ञान देना"	58
27.	"दादा भगवान का गरीबों को प्यार करना"	60
28.	"भगवान के मुख से हमेशा ज्ञान ही निकलता"	62
29.	"पहेलियों में ज्ञान पक्का कराना"	63
30.	"दादा भगवान की नम्रता व अपने को गुप्त रखना"	66
31.	"जकार्ता वाली सुलक्षणी को ज्ञान देना"	68
32.	अश्रद्वालू को तकलीफ देखनी पड़ी	70
33.	"भगवान दादा का आसक्ति निकालना"	71
34.	"दादा भगवान हर बात में सजग थे"	72
35.	"भगवान सबको **Encourage** करते थे"	73
36.	"अपने को मोड़ना"	74
37.	" हर समय मौज ही मौज ""	75
38.	"निर्मोही दादा भगवान "	76
39.	"दादा भगवान की करूणा"	77
40.	"अद्वैतमन"	78
41.	" मौन में ज्ञान देना "	79
42.	" निस्वार्थ ज्ञान "	80
43.	"निर्भय निराकार दादा भगवान'	81
44.	"दो स्त्रियों को आत्म साक्षात्कार कराना"	82
45.	"एक सन्यासी ने दादा भगवान की परीक्षा ली"	84
46.	"श्रद्धा वालों को ज्ञान दो अपने वालों को भी"	85
47.	दिल्ली में भटके हुओं को राह दिलाना	87
48.	"भक्त करामते देखते थे"	89
49.	" यहाँ दों चार बातें लिखते हैं।"	90
50.	"अंदर का संकल्प विकल्प भगवान को पहुँच जाता हैं"	92

ॐ

क्रमांक	विषय	पृं0सं0
51.	" अचानक पहुँच कर मुर्दे को जीवन दान देना"	93
52.	"अचानक पहुँच कर मुर्दे को मुक्त करना"	94
53.	"भगवान दादा अंर्तयामी घर–घर वासी"	95
54.	"भक्त भगवान के वश में"	96
55.	"भक्त की भावना पूरी करना"	97
56.	"ज्ञान से जीवन बनाना"	98
57.	"शुक्राने सिखाना"	99
58.	"भगवान की एक बात" **Point**	100
59.	जनरल को ज्ञान देना	101
60.	"आंखो के डा0 को ज्ञान देना"	102
61.	" बीमारी के समय"	103
62.	"बीमारी का कारण"	108
63.	"भगवान दादा का लखनऊ जाना"	110
64.	"धन्य–धन्य है दादा भगवान"	114
65.	"भक्त द्वारा दादा भगवान की महिमा"	117
66.	"दादा भगवान की दिव्यता और महिमा का श्रद्धा पूर्वक गुणगान	119
67.	दादा भगवान के साथ बिताए कुछ क्षण	125
68.	दादा भगवान अन्तरयामी	128
69.	दादा भगवान युग प्रर्वतक	130
70.	दादा भगवान मूल मंत्र	131
71.	स्वामी राम तीर्थ कां गृहत्याग	141

ॐ

दादा भगवान का जीवन चरित्र एवं दिव्य लीलायें

"सब धरती कागज करू लेखनी सब वनराय।
सात समुद्र की मासे करू फिर भी गुरू गुण लिखान जायें।।"
"गुरू गोविन्द दोनों खड़े काके लागू पायें।
बलिहारी गुरू आपणो जिन गोविन्द दियो मिलाय।।"

दादा भगवान करूणा प्रेम के सागर सर्वश्रेष्ठ महात्मा, खुद परब्रह्म परमात्मा अकथनीय अमर दिव्य ज्योति अमृत दाता, निर्विकार, निरंजन, चन्द्रमा जैसे शीतल पूर्ण भगवान, अद्वितीय, अलौकिक, अद्‌भुद आंनद प्रेम वा करूणा की मूर्ती अवर्णनीय, ऐसे सच्चे भगवान निरकार, साकार रूप धर कर जगत में भक्तों के लिए उनके उद्धार के लिये प्रकट हुये।

ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर चम की जुबान इन दिव्य विभूति पारब्रह्म परमात्मा का क्या वर्णन कर सकतीं हैं?

उनका जीवन शांत, मौन, अखंड आनंद से भरपूर तथा अद्‌भुत था। कुछ दिव्य झाकियाँ अलौकिक लीलायें इस पैगम्बर की लिख सकते हैं जो भक्तों ने सुनी और अनुभव की। अधिक तो क्या कहें पूरे सतगुरू का जीवन

सामने आर्दश अनुभव प्रकाश है।

पैगम्बर का जीवन ज्ञान और प्रेम से ओतप्रोत होता है। ऐसे सच्चे पैगम्बर धरती पर आयें तो कईयों का उद्धार होता है।

वैसे हमेशा ही उनके Vibrations सृष्टि में रहते है। ऐसे पूर्ण भगवान "दादा" इस धरती पर स्न 1890 में 3 जनवरी को अवतरित हुये। Born with gold spoon in mouth. दादा भगवान का राज घराने में अवतॅरण हुआ।

बचपन में उनका जीवन साधारण मनुष्य से कई गुना पाक व पवित्र था। जैसी कहावत है कि–

"होनहार बिरवान के होते चीकने पात"

वैसे दादा भगवान का बचपन भी असाधारण रहा।

भगवान दादा की करूणा का दीदार उनके विद्यार्थी जीवन के समय से ही मिलता है खुद पूरी जानकारी रखते हुये भी दूसरों के उत्थान के लिये अध्यापक से प्र० करते थे ताकि उन्हें पूरा उत्तर मिले जिससे वे आगे बढ़ सकें।

एक बार स्कूल में उन्होंने एक ड्रामें मे Part लिया। परन्तु जब ड्रामा खेला जाने वाला था उससे कुछ दिन

पहले दादा भगवान बीमार पड़ गये। जब Teachers को पता लगा तो Principal को बड़ी चिन्ता हुई कि इसक बगैर ड्रामा कैसे खेला जायेगा। इसको जल्दी ठीक होना चाहिये। सो सब लोग दादा भगवान की सेवा मे जुट गये। कोई डा० को बुलाये कोई दवा लाये आदि......। ऐसे सबके संकल्प से भगवान जल्दी ठीक हो गये। बात तो साधारण थी परन्तु दादा ने इस बात से अनुभव किया कि निराकार को इस धरती पर ड्रामा करना है तो इसको मारेगा नहीं और उसको ही सम्भालने की गर्ज है। इस बात से उनको मौत का भी भय नही रहा। वह इतने निर्भय हो गये थे कि जान बूझकर खतरों से खेलते थे और हमेशा बच जाते थे। कभी–कभी वे वहाँ भी चले जाते थे जहाँ खतरा लिखा होता और जाने कि सख्त मनाही होती और वे बचकर आ जाते। एक बार एक जगह बारूद ही बारूद लगा हुआ था भगवान वहाँ भी चले गये बारूद से पत्थर उड़े पर भगवान का बाल बांका ना हुआ।

निष्कामता का गुण भी पहले से ही था। जैसे रविवार के दिन लोगों को डाक के लिफाफे टिकट मिलने की कठिनाई होती है तो भगवान पहले से ही इकट्ठे करके रखते थे ताकि जरूरत के समय सबका काम निकले।

सृष्टि में हर पैगम्बर का जीवन कुछ विशेष कार्य क लिये होता है। दादा भगवान जैसे स्त्रियों के उद्धार के लिये ही प्रगट हुये। उस समय हैदराबाद सिंध में स्त्रियों के उपर खूब अत्याचार होते थें। विशेषतया खास त्योहारों पर जब इनके मयाके से ससुराल में कुछ कम मिलता था तो सास ससुर डायन जैसा बहु को दुखी करती थी कि तेरे मायके से ये नही आया वो नही आया।

विधवाओं से भी अत्यंत क्रूर व्यवहार होता था। इस प्रकार के जुल्मों से दुखी होकर कितनी ही स्त्रियाँ अपने को आग लगा कार मार डालती थी। ऐसी स्त्रियों को देखकर दादा भगवान को अति करूणा होती थी कि कैसे इन लोंगो को कष्टों से छुड़ाये। उनका ह्रदय बहुत कोमल था। पंचायत में भी इस विषय पर चर्चा करते और कभी–कभी सबको इकट्ठा करके जुलूस भी निकालते। ऐसा सच्चा वा दृढ़संकल्प उनका पूरा होकर ही रहा– जो आज स्त्रियों को ताकत मिली है खुद जीने की कला सीखकर औरों को भी ताकत देती है। ❑

"व्यावहारिक जीवन"

दादा भगवान का व्यावहारिक जीवन 40 वर्ष तो आराम से बीता। व्यावहारिक जीवन में भी उनको समझ थी कैसे जीना है। "How to live" दुनिया में लोगों के पास दौलत है दिल है तो दिमाग नहीं है। दादा भगवान हर तरह से शंहशाह होकर रहें। कपड़ों के कारखाने थे उनके विदेशों मे भी आना जाना होता था, मौज ऐसी थी जो कोई मेहमान आता था तो नई गाड़ी लेकर उन्हें घुमा फिराकर फिर बेच देते थे। मतलब हर तरह का योग।

कपड़े की दुकान में भी शक्ल से ही पहचान लेते कि किस Quiality का ग्रहक आया है। उसे उस तरह का कपड़ा दिखा कर बिना बात के एक शब्द में सौदा कर लेते थे।

एक आदमी की दादा भगवान ने तन और धन से तकलीफ के समय बहुत मद्द करी उसको बहुत भारी मुसीबत से बचाया। वह आदमी इतना शुक्रना करने लगा जो उसने कहा कि मैं अपनी चमड़ी के जूते पहनाकर भी उनके एहसान से उऋण नहीं हो सकता लेकिन जब दादा भगवान को जरूरत पडी़ तो चमडी़ क्या दमड़ी से भी मद्द ना करी। यह भी एक तरह से अच्छा रहा। भगवान ने

बचपन से ही देना सीखा था लेना नहीं।

दादा भगवान का व्यापार के कारण विदेशों में आना जाना होता था। एक बार भगवान विदेश में थे। वहाँ से उन्होंने हीरे खरीदकर सिन्ध भेजे, उनके पास केवल चार आने ही बचे और आने जाने का रास्ता बन्द हो गया। पैसा बाहर से आ जा नही सकता था तो भगवान बस की लाइन में खड़े थे केवल चार आना था तो भगवान को ख्याल आया कि इधर शरीर छूट जायें तो लाश भी उठाने वाला कोई नही है।

मन भगवन से ईमान निकाल रहा था। उसी समय एक व्यक्ति आया भगवान से बोला मुझे हीरे खरीद दो। भगवान ने उसे एक लाख के हीरे खरीद कर दिये और दस हजार उनको कमीशन मिला तो एक दम अनुभव मिला भगवान तो बड़ा मेहरबान है, भगवान क्या नहीं कर सकता, भगवान की कपड़े बेचने की दुकान थी। भगवान इतने करूणा वाले थे जो कभी किसी गरीब स्त्री को कोई चीज पंसद आ जाती थी, परन्तु वह इतना पैसा नही खर्च कर सकती थी, भगवान उसको सस्ते में ही दे देते थे। वह खुश हो जाती और सब को सुनाती।

दादा भगवान हर ग्राहक को बड़े प्रेम से कपड़े

खोलकर दिखात भले वह नहीं लेता था या बेटे भी नाराज होते थे कि आप इतनी मेहनत क्यों करते है। तो कहते थे कि अच्छा है। कोई खोलता है कपड़े हमारी सफाई हो जाती है कीड़ा नहीं लगेगा और कपड़ों को भी हवा लग जायेगी।

कपड़े के व्यापार में एक और अलौकिक बात थी दादा भगवान अपनी पंसद वा डिजाइन का एक ड्रेस का कपड़ा मिल से बनवाते थे। वा पैसा पूरे थान का देते थे। माना उस तरह की एक ही ड्रेस होगी दूसरी नहीं। पैसे भी इस तरह से लेते थे। सभी खरीददार उनके पास आते थे। कि इनकी जैसी ड्रेस और कहाँ मिलेगी?माना कहीं नही।

❐

"प्रकृति का बदलाव"

फिर एक दिन प्रकृति की लीला ही बदल गयी– क्यों कि निरांकार को दादा भगवान के ज्ञान को प्रकाशित करना था। अचानक 40 वर्ष की उम्र में प्रकृति प्रतिकूल हो गई उनको विदेश से समाचार मिला कि उनके मैनेजर ने दीवाला निकाल दिया है। प्रकृति की लीला देखकर वह शांति में, बगीचों में, एकान्त में, जाकर बैठते थे। आंतरिक खोज शुरू हो गयी। सच्चा सुख कहाँ है?पदार्थों की नश्वरता का अन्तर बोध होने लगा। एक दिन वहाँ एक ज्योतिषी ने दादा भगवान का हाथ देखकर कहा कि आप के हाथ में राजाई लिखी पड़ी है। उस पर दादा भगवान ने कहा कि मेरी तो सारी राजाई ही चली गयी खत्म हो गयी। अब कुछ नही है। परन्तु यह बात सच ही निकली जो दादा भगवान को ज्ञान की परम् राजाई प्राप्त हो गयी।

"ब्रह्मज्ञान से सृष्टि के मालिक हो गये।"

अचानक दादा भगवान की मुलाकात एक कच्छी गुरू जिनका नाम "लाला जी महाराज" था। हो गयी। सारे शहर में मालूम हो गया था कि ऐसा गुरू आया है जिससे कोई भी नही पहुँच सकता। सब संत शास्त्रार्थ के लिये पर लाल जी भगवान के निश्चय को नमस्कार करके चले

गये।

दादा भगवान को उनके ज्ञान से काफी आंनद आया। सच का आंतरिक सुख शुरू हो गया। लाला जी भगवान ने दादा भगवान को उपदेश दिया कि दीवाला तो व्यापार में निकलता ही है। कभी नफा कभी नुक्सान पर मुझ आत्मा का कोई दिवाला नही निकाल सकता बात कुछ ऐसी थी जो दादा भगवान के अंदर बैठ गयी और उन्होंने प्र० उत्तर करके सारा संशय भ्रम निकाल दिया और एक वर्ष तक लगातार गुरू का संग किया।

एक दिन दादा भगवान गुरू के पास सत्संग में काफी आंनद से बैठे थें। उनके साथ एक दोस्त भी गुरू के पास चला था वो बार–बार इशाराकर रहा था कि अभी चलो अभी उठो। उस दिन से भगवान ने निश्चय किया–

"संत के पास जाइये तो साथ ना लीजिये कोई"

दादा भगवान को ज्ञान से इतना प्रेम हो गया जो रोज गुरू से वचन सुनते उसमें से एक अक्षर कापी में लिख लेते फिर उस एक वचन पर सारा भजन बना लेते और रोज गुरू को सुनाते गुरू भी बड़े प्रेम मे आ जाते। क्यों कि गुरू के ज्ञान का वारिस कौन होगा जो सच्चा होगा और जो उन्नति करें।

भगवान दादा को रात में नींद में भी भजन या Point याद आती थी वो उठकर लिख लेते थे। दादा भगवान गुरू के पास गये–गुरू के जो भी शिष्य थे। उनका अनुभव वचन और शिक्षाली, जिससे श्रद्धा और भी बढ़ गयी– और गुरू से भी पूरा ज्ञान ले लिया। ❐

"दादा भगवान के ज्ञान पूर्ण जीवन का वृतान्त"

एक बार दादा भगवान गुरू के पास गये गुरू से पूछा आपके पास पाला (एक स्त्री का नाम) आई थी। वह स्त्री गुरू से मिलकर नीचे गयी थी। गुरू जी उसमें अपना ही रूप देखते थे।

तो नाम रूप में कैसे जाये तो बोले कौन पाला– दादा ने (बोला) बताया पहले तो निश्चय नही हुआ कि ऐसा भी हो सकता है क्या?जो नया रूप भूल जाये पर जब खुद पूर्णतः में आ गये तो कोई कहता था दादा जी डाक्टर आया है, इंजीनियर आया है। दादा भगवान अपनी खुमारी में मस्त नाम रूप ही भूल जाते थे क्योंकि दूसरा देखते तो याद करें।

एक बार लाला जी ने सत्संग में कहा जब तक मेरे को तन मन धन अपर्ण न करेगें तो ज्ञान न होगा तब दादा भगवान ने विचार किया गुरू तो तन–मन–धन की बात करता है शायद सब कुछ ले जायेगा उसी समय गुरू ने कहा तुम्हारे भीतर में पाप बैठा है तब दादा को विश्वास आया कि गुरू दर्पण जैसा सच्चा है। उसको हर बात का पता चल जाता है फिर तो पूर्ण श्रद्धा के साथ ज्ञान प्राप्त

किया। समय–समय पर दादा भगवान गुरू की स्तुति करते थे तब गुरू औरों को सिखाते थे क्या तुम्हारा मुँह जलता है जो गुरू की स्तुति नही करते। शुक्राने नही मानते। वहाँ 36 जने थे तो दादा भगवान पहले आ गये– रेस के घोड़े होते है उनमें पहले पीछे की बात नही पर जिस घोड़े की रेस तेज होती वही आगे निकल जाता हैं दादा भगवान का सच का तेज था जो आगे बढ़ गये।

एक दिन गुरू ने दरवाजा बन्द कर दिया कहा–

"जो शीश दे वो ईश पावे"

सब प्रेमी लौट आये पर दादा भगवान ने पूर्ण समर्पण किया गुरू ने कहा मुझपे झुका है सारी दुनिया तुझपे झुकेगी। गुरू वाक्य सत्यम हुआ।

जो आज सच का इतना फल निकला है 12 महीने लगातार गुरू का संग करके आत्म साक्षात्कार किया गुरू से कहा।

"मिल गया जो था कि मिलना काम क्या बाकी रहा"

उसके बाद 14 साल अपनी आत्मा मे पूर्ण संतुष्ट कर्म योगी सारी दुनिया में असंग खुद को पाकर खुद की सुजागी में रहे। इत्तफाक से कोई मिला तो ज्ञान सुनाया।

जब–जब धर्म ग्लानि होती है पाप बढ़ जाता है तो भगवान प्रकट होते है, ऐसे ही दादा भगवान भी स्त्रियों के उद्धार के लिए प्रकट हुए। उस समय स्त्रियां बिल्कुल गुलाम हो चुकी थी। मर्द उस समय स्त्रियों बच्चा पैदा करने की मशीन समझ कर रखते थे भगवान दादा ने उनमें एक नयी शक्ति जागृति पैदा करी एक बार बम्बई में पर दादा भगवान के गुरू आये थे तब भगवान उनसे मिलकर नीचे आये तो आनन्द और नशे में भरे हुए थे वहां बगीचे में बैठी स्त्रियों के बीच जाकर बैठ गये और उन्हें ब्रम्ह ज्ञान सुनाना शुरू कर दिया सभी हैरान हो गये कौन है दादा भगवान प्रगट हुये पर मूर्ख लोंगो ने पहचाना नही।

भगवान के आगे तो सब अपना आप ही था इतना उनको प्रेम का नशा था कोई पूछता था आज की ताजा खबर क्या है भगवान बोलते तू भगवान है यही नई खबर है एक आदमी ने कहा अगर आप भगवान है तो बताइये मेरी मुठ्ठी में क्या है भगवान ने कहा मैं ही तो हूँ आत्मा ही तो है। ❐

"दादा भगवान का रिफ्यूजीस को ज्ञान देना"

एक बार दादा भगवान जहाज में सफर कर रहे थे उसी जहाज में रिफ्यूजी लोग भी सफर कर रहे थे वे अत्यन्त दुःखी थे उनको खाली हाथ देश से निकाल दिया गया वे सब सोच रहे थे कहाँ जायेंगे, कहाँ रहेगें, कहाँ खायेगें, कहाँ सोयेगें, उस समय दादा भगवान ने उनको विश्वास दिलाया कि भगवान ने पहले ही खानाघर कपड़ा सब तैयार कर रखा है।

God has already Planned For You.

तेरी रोजी तुझको ढूढ़े दिल विच कर आराम
दाने–दाने पर लिखा है खानेवाले का नाम।।

निराधारों को शब्दों का आधार मिला उन्होंने भगवान दादा से पूछा आप कौन है भगवान ने बोला मैं christ हूँ तो वे बोले आप कैस christ है भगवान ने कहा तुम्हारे में कोई christ है तो वो सब चुप हो गये फिर दादा भगवान का सत्य संकल्प पूरा हुआ। जिस शहर में उतरे वहां पर एक अत्यन्त धनवान रिफ्यूजी व्यक्ति रहता था उसको जब

मालूम हुआ कि उसके देश वालों को निकाल दिया गया है उसने उन सबके लिए इंतजाम कर रखा था और वे थोड़ा समय उनका आधार लेके अपने पैरों पर खड़े हो गये। उन्हीं दिनों word war छिड़ गयी सब चीजें मँहगी हो गयी इन लोंगो ने थोड़े दिनों में बहुत धन कमा लिया उस समय तो दादा भगवान उस शहर में नही उतरे पर कुछ वर्षो के पश्चात उस शहर में गये तो उन्होंने पहचान लिया और दादा भगवान को एक रथ पर बिठा कर सारा शहर घुमाया कहा हमारा Christ वापस आ गया है बड़े प्यार से कहा our christ our christ has come जिसने समय पर हमको धीरज प्रेम दिया डूबतों को बचाया उन लोगों ने दादा भगवान को बहुत स्तुति की, ऐसे दादा भगवान कभी राम कभी कृष्ण कभी तो क्राइस्ट बनकर अपने प्रेमियों के लिए आये। ❒

"पॉल ब्रुंटन से मुलाकात"

एक बार दादा भगवान की पॉल ब्रुंटन से मुलाकात अचानक एक होटल में हुयी। पॉल ब्रुंटन ने भारत की खोज और रमण महर्षि का जीवन चरित्र लिखा है होटल में एक और श्री राम चन्द्र सिन्धी भी थे और पॉल ब्रुंटन से आटो लिखवाया Paul Bruton ने लिखा You have come from heaven and you have go to heaven. दादा ने कहा इस वाक्य को पढ़कर Paul पूछा क्या वह राम इसका अर्थ समझता है तब भगवान से उसका यथार्थ अर्थ जानकर Paul भगवान की ओर आकर्षित हुआ और वार्तालाप किया पाल को किसी कारणवश दूसरी ओर जाना था तो वार्तालाप अधूरा रह गया। तब दादा भगवान ने उससे पूछा आप किस ट्रेन में जाते है बड़े आश्चर्य की बात हुई कि जिस ट्रेन में 10 दिन पहले से ही Reservation मिलना मुश्किल था उसी Same Compartment में Paur Bruton ने ऊपर वाली Seat का Reservation कराया इस पर पाल हैरानी में आ गया कि ये कैसे हुआ वह यह नही जान सका कि सृष्टि के मालिक के हाथ क्या नही है फिर सारी रात बात करके मौज लूटी

Bruton हैरान हो गया कि भारत में साधारण देश में भी बृम्हज्ञानी होते है क्या? ❐

दादा भगवान का लाली और ज्ञानी दादी को ज्ञान देना

हैदराबाद (सिंध) में ज्ञानी और लाली दोनों प्रेमी एक संत के पास जाती थी दादी ज्ञानी के पति उस समय जकार्ता में थे। लड़ाई के कारण उनके पैसे आने बंद हो गये दादी ज्ञानी के कुटुम्म में एक बेटी वा ससुर थे। सरकार की और से लड़ाई के कारण 30 रू० मासिक मिलते थे जिससे उनका गुजारा अच्छा चलता था एक बार एक संत ने दादी ज्ञानी से 100 रू० मांगे उनका मन चलने लगा ऐसी गरीबी में 100 रू० कहाँ से लाऊँगी– और उसी मन की दौड़ ने सच की प्राप्ति सच्चे गुरू खोज को पूरा किया। अचानक एक श्री लोकूमल उन्हें मिले दादा भगवान के मित्र थे दादा बोले सच्ची खबर है कि तू आत्मा है वह हैरान हो गया पूछा तो दादा ने समझाया लोकूमल ने दादी लाली को दादा भगवान का Address दिया दादी व लाली दोनों भगवान के पास पहुंची। दादा भगवान तो खुद मस्ती में एक घंटा शान्त आंखें बन्द करके दुकान में बैठे थे। कुछ समय बाद ज्यों ही लाली उठी तो दादा भगवान का ज्ञान टूटा दादा ने उनके आने का कारण पूछा दादी ज्ञानी ने मजाक में कहा पहचानते हो दादा भगवान ने एकदम

जबाब दिया तू तो भगवान है तू न आदि खां ई मूसा मिलयलू आही (तू तो आदि से मुझको मिली हुई हो)

इस उत्तर पर ज्ञानी दादी और लाली मौन शान्त हो गयी। आज भी दानों विदेशों में ज्ञानयज्ञ चला रही है और दादा भगवान की मेहनत का फल दूसरों को खिला रही हैं दादी लाली लन्दन में दादी ज्ञानी जकार्ता में आज भी उनकों वह नशा और प्रेम है।

दादी लाली ने जब ज्ञान सुना तो उसको उतना ज्ञान का नशा चढ़ा जो खुद एक दिन आधी रात को 3.30 बजे दादा भगवान के पास पहुंच गयी रास्ते में पुलिस वालों ने देखा माई आप को मालूम है समय कितना है आप कहां जा रही है पर वो तो नशे में थी उनको समय का पता न चला सच में भगवान में ऐसा आकर्षण है जो सुध–बुध भूल जाती है। उनको कभी बदनामी आये पर सच के रास्ते पर जीव होकर रहती है एक दिन दादी लाली के पति दादी लाली को अपने गुरू के पास ले गये वहां दादी लाली ने एसे ब्रम्ह की बात की जो गूरू हैरान हो गया कहा इसको खाजी (साधारण) मनुष्य नही है भगवान मिला है जिससे ये जाग गयी है। ❐

''पटियाला की रानी को ज्ञान सुनाना''

एक बार भगवान दादा एक औरत को जिस नर्वसनेस की बीमारी थी उसको ठीक करने के लिए पहाड़ पर ले गये उसको डाक्टर ने कहा तो यह सिर्फ खुशी में ठीक होगी वहां पर पहाड़ पर भगवान दादा ने उसको दिलजान से ज्ञान व प्रेम दिया। उसको ज्ञान की बातों से अच्छे–अच्छे अनुभव सुना कर हँसाया।

Batminton खिलाया वहां पर दादा भगवान ने कहा कि हम पटियाला के राजा के पास चलते है वहां उसकी रानी को आधे–आधे घंटें में उल्टी होती थी। वहां जब भगवान दादा गये और रानी को सच की बात सुनाई तो ऐसी करामत हुई कि रानी की उल्टियां बन्द हो गयी– इस पर राजा को चिन्ता हुई कि मेरी रानी पर पुरूष के साथ बैठकर चार घंटे बात कर रही है तो रानी ने उत्तर दिया कि आप यह करामत नही देखते कि चार घंटे से बैठी हूँ लगातार पर एक बार भी उल्टी नही हुई यह तो पूर्ण भगवान आये है। फिर राजा दादा भगवान को बाहर ले गया पहाड़ पर ही महलात था वहां से दिखाया देखो इतनी बड़ी रियासत है इस पर दादा ने कहा सारी इण्डिया और सारा वर्ल्ड में इस रियासत को दिखाओं उसको यह वचन

सुनकर शर्म आ गयी, भगवान दादा ने कहा तू हद का मालिक है मैं बेहद का मालिक हूँ सृष्टि के मालिक को छोटी सी हद देखकर क्या खुशी होगी। भगवान दादी की निराशक्ति की भावना का दीदार राजा और रानी को हुआ। ❐

भगवान दादा का T.B. वाली लड़की को ज्ञान देना

हैदराबाद सिन्ध में एक लड़की थी उसको T.B. की बामारी थी वह अपनी बीमारी की वजह से बिस्तर पर ही रहती थी– और हर चीज विस्तर पर ही मांगती थी। भगवान दादा ने उसको बहुत प्यार किया व साथ दिया। उसको अमृतसर लेकर गये। एक दिन उसने पानी मांगा तो भगवान दादा ने कहा कि तुम आप ही खुद उठकर पानी लो (अमृतसर में पम्प चलाकर पानी भरते थे। उसने कहा मैं गिर जाउँगी दादा ने कहा तू खुद पानी भर अगर गिर जायेगी तो मैं उठा लूगा। उसने हिम्मत करके पम्प चलाकर पानी भरा और पिया तो उसको विश्वास आ गया कि वह अपने आप चल सकती है वह गिरी नहीं। फिर वह अपनी सेवा अपने आप करने लगी भगवान दादा के साथ वह भी धीरे–2 पैदल चलती थी उसको आलौकिक शक्ति आ गयी। बृम्ह ज्ञानी के सच की ताकत व वचनों से उसकी बीमारी 20 वर्षों वाली कुछ ही दिनों में ठीक हो गयी। ये है सच्चे संत की महिमा।

अंधा देखे लगड़ा चल कर पहुचें काशी रे।

"भगवान दादा का उदयपुर आना और ज्ञान प्रगट करना"

सन 1947 में जब हिन्दू मुसलमानों लड़ाई होने लगी थी तब दादा भगवान ने कुछ भक्तों से कहा कि चलो हम तीर्थ यात्रा पर चलते है लोग तो डर से घर छोड़ रहे थे कुछ बैठे थे परन्तु भगवान को मालूम था कि आगे क्या होने वाला है तो पहने ही सिन्ध छोड़ दिया।

ब्रम्ह ज्ञानी का जहां पाव पड़ता
वह तीर्थ स्थान बन जाता है

वह भगवान सिन्ध से उदयपुर आ गये उदयपुर के लोग उदयपुर को अंधेरा शहर कहते थे पर भगवान के यहां जाने से वह रोशनपुर हो गया, वहां पर भी कितनों को जाग्रता मिली जो आज भी आपस में मिलकर सत्संग करते है बृम्हज्ञानी का जहां पैर वहां खैर। वहां पर एक Civil Hospital का डाक्टर था अचानक उसकी भगवान दादा से मुलाकात हो गयी डाक्टर ने बताया, वह बहुत दःखी है उसको नींद नही आती है दादा भगवान ने कहा मै तुम्हें गीता का ज्ञान सुनाकर ठीक कर सकता हूँ। उसने कहा गीता तो मुझे मुह जबानी याद है। मेरे पास कितनी धार्मिक पुस्तके है। फिर मुझे शान्ति नही उसने बताया, कि वह

सरकारी डाक्टर था, उसने गरीब के लिए मुफ्त दवाइयां मिलती थी, वह इंजेक्शन को दुकानों पर बिक्री कर देता था गरीबों को नहीं लगाता था। उससे एक लाख रूपया जमा किया इससे कितने गरीब लोग मर गये अभी सारी रात उनकी सूरत मेरे घूमती रहती है मुझे कहते है तू भी मरेगा वो तेरे से पूरा हिसाब लेंगे। मै रात भर डर के मारे सो नही पाता मेरी शिकायत जब सरकार को गयी। तो यहां के राजा ने साफ लिख भेजा कि ये डाक्टर बड़ा सच्चा है। इसका कुछ कूसूर नही हैं क्योंकि उस राजा को मैंने ठीक किया मौत से बचाया था इसलिए चौदह लाख की जागीर गिफ्ट में दिया है पर भगवान ने एक भी बेटा नही दिया और मन में शान्ति नही है, इस शान्ति के लिए सभी संतों को बुलवाया 100 कोठियां बनवाई पर दान पुण्य से शांन्ति नही आयी मै पूछता हूँ दान पुण्य से मांफी मिल सकती हैं तो संत कहते है नही सत्कर्म का फल सत वद कर्म का फल वदकर्म ही मिलेगा। मांफी नही हैं भगवान दादा ने उसको ज्ञान दिया और बताया कि ज्ञान मया तब कर्म ही नाश और तुम पाप का पछतावा करों कि मैं फिर ऐसा पाप दुबारा नही करूगां तब तुम्हारा पाप मांफ हो जायेगा जैसे सपने में कोई खून करे पर जागने पर उसको

सजा नही मिलेगी। ऐसे अज्ञान में तुमने कर्म किया पर अब तू आत्मा है इस प्रकार भगवान दादा को ज्ञान सुनकर उसको अच्छी नींद आई। वह सोचने लगा कैसा भगवान मुझे मिला है भगवान ने उससे एक कौड़ी भी नही लिया। बृम्हज्ञानी के संग से और ज्ञान से अनेकों के Tensions घूट जाते है बीमारियां खत्म हो गयी क्योकि अधिकतर बीमारियां मन से है। Man-98%, Mental-and 2% Physically बीमार है Mentally ठीक हुआ तो Physically भी ठीक हो जाता है एक दिन एक सी दरवाजे के बाहर उदास खड़ी थी।

भगवान ने पूछा कारण तो उसने बताया मेरे पेट में गोला है मेरा पति डा० से बात कर रहा है उसने आपरेशन बोला है तो भगवान ने कहा हमारा सात दिन ज्ञान सुनो तो गोला ठीक हो जायेगा इतने में उसका पति आ गया यह बात सुनकर उसने डा० से आपरेशन की Date Change करवा दी और उसका घर भी भगवान के घर से नजदीक था ज्ञान सुनकर फिर डा० को दिखाया तो गोला गायब हो गया उस स्त्री को यह चिन्ता थी कि मुझे बच्चा नहीं होगा। तो मेरा पति दूसरी शादी कर लेगा इसी चिन्ता में गोला हुआ था फिर ज्ञान से उतर गया सर्ब रोग का औशध नाम

पूरे गुरू की कृपा से क्या नही हो सकता। ❐

"उदयपुर में धोबिन को ज्ञान"

भगवान ने धोबिन को भी ज्ञान दिया उसने तीन दिन ज्ञान सुनकर बोला मैं आत्मा हूँ। तीन दिन के बाद उसको कालरा हो गया वह आत्मा आत्मा कहते शांत हो गयी इसी प्रकार उदयपुर में एक साल तक ज्ञान फैला कर भगवान दादा बम्बई में आ गये और यहां से ज्ञान का प्रकाश चारों दिशाओं में फैल रहा है। ❐

दादा भगवान का निरइच्छापन :–

भगवान दादा सारी उम्र निरीच्छा बैरागी होकर रहे। अपनी देह की तो उन्हे परवाह नही रही घर में खोला रखा था कि कभी मेरे लिए खाना नही बनाना जो बचेगा तो ठीक है नही हो छुट्टी। क्योंकि ज्ञानी का शरीर कभी किधर तो कभी किधर अगर खाने के समय कभी नही पहुँचा तो स्त्री दरवाजा पर आंख लगाकर लगातार बैठेगी कब आयेगा खाना खायेगा– फिर अगर नही खायेगा तो सोचेगी कहीं खा के आया होगा तब मार देगी कि मेरा खाना बेकार क्यो गवांया?घरवाले भी समझते थे ये अब हमारे नही है ये भगवान के है तो बहुत बेपरवाह होकर रहते थे ऐसे वैराग्य पूर्ण अवस्था में एक दरवाजे से प्रवेश करके दूसरे से निकल जाते। "मौन में आना मौन में जाना" उनके जीवन से किसी को कष्ट महसूस नही हुआ। घर में चारों बेटों को कमरे देकर खुद बाहर गैलरी में छोटा सा पलंग डालकर सोते थे। वर्षा ऋतु में Rain Coat डालकर या प्लास्टिक डालकर सो जाते थे जो सुबह उठकर चले जाये तो किसी को तकलीफ ना होती।

धरती पर मानों हवा जैसा हल्का होकर रहे। शरीर का सुख लेना मानों उनमें नाममात्र नही था शर्ट का कालर

फट जाता तो उसको उल्टा कराके काम चलाते थे। वह एक टका भी उनका अपना खर्चा नही था। कितनी बार उनकी पाकेट में पैसे नही होते कभी कभी उनके घरवाले देखते किराये कि लिए भी पैसे नही है तो थोड़े से पैसे जेब में डाल देते भगवान खुद बिन कौड़ी बादशाह हो गये। धन जो मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते है वह धन भगवान के लिए तुच्छ रहा। Money is useless उन्होंने हमें Practical दिखाया। अपना तन मन धन निष्काम में लुटा दिया। घर वालो का विरोध होते हुये भी उनका यज्ञ चालू रहा। कभी–कभी पत्नी कहती बच्चे व्यापार में होशियार नही है उनकों सलाह दो तो भगवान दादा कहते थे मैं जीते जी मरकर देखता हूँ कि मेरे बाद ये कैसे चलेगें जीते जी ग्रहस्थ में रहकर अपना मौत किया जो आप हम लोगों को भी यही सिखाया। "जीवन मुक्ति उसी को मिलेगी जो जीते जी मर कर रहेगा।" का सिद्धांत उनके जीवन में रहा जो आप हमें प्रसाद के रूप में मिल रहा है।

दादा के भाई जो विधुर थे भगवान दादा के परिवार में ससुर का पार्ट अदा करते थे भगवान दादा घर में कुछ बनकर नही रहते थे भगवान दादा का घर में होना ना होना एक जैसा था– खुदी को मिटाकर खुदा हो गये।

इतना खुद को मिटाया जो घर का नौकर भी इज्जत नही करता था– कभी दादा भगवान कहते थे कि सत्संगी आये है कुछ सामान ले आओं तो नौकर तीखा कड़ुआ कटू उत्तर देता कि बहू का काम करना है बच्चे का घुमाना है। दादा भगवान इतना कठोर अपमान सहकर भी कभी अपना मौन भंग नही करते थे। जीते जी अपने को फना कर दिया था लेकिन अपने प्रेमियों को प्रेम से भर देते थे।

भगवान दादा अपनी स्त्री से इतने विरक्त होकर रहते थे मानो उनको एक शब्द का भी व्यवहार नही था वह इतना ही कभी–2 चाहती थी कि दादा भगवान मेरे से पूछे कि तेरी तबियत कैसी है तू कैसी है तो मै खाना खा सकूंगी नही तो खाना भी चार–2 दिन नही खाती थी।

पर दादा भगवान ने अपनी सच की मस्ती में एक शब्द भी घर वालो से बोलना अज्ञान जान लिया जैसे पराई स्त्री से कोई व्यवहार नही रखता है ऐसा अपना कौन?पराया कौन?सचमुच ऐसा ही करके दिखाया है।

उस समय दादा भगवान की भी अडोलता का पूरा आभास होता है कई भक्त कहते थे भगवान आपको माया लिपाय मान नही करती आप स्त्री से दो मिनट बात करोगे तो वो खुश हो जायेगी भगवान दादा कहते थे हमें तो कुछ

नही होगा पर उसका पुराना मोह फिर से जाग जायेगा। और मोह मे शान्ति कदाचित प्राप्त नही होगी अगर कभी वो स्त्री भगवान और दूसरें भक्तों के साथ चलती थी कि मै भी आप से बगीचे में सत्संग सुंनूगी वो भगवान रास्ते में उनसे पूछते थे कि ज्ञान तुम्हें अगर समझना है तो इस लोक का अर्थ सुना "सुखदुख समझकर जानों और मान अपमान" तो वह पूरा बता ना पाती थी क्योंकि उसके भीतर ज्ञान की प्यास इतनी थी नहीं। वह चलती थी मोह में फिर से उसे इस बात का महामारी दुख होता था कि भगवान दादा ने भक्तों के सामने अपमान किया है और घर में आकर खून के बहाती पर इस पर भगवान दादा वज्र कठोर समान दिल बनकर उसी ब्रम्ह की सत्ता को सत्य जानते उनको उसका रोना फफकना चिल्लाना सब स्वप्न लगता था।

कभी–2 वह बात करने की कोशिश करती तो ज्ञान उसके भीतर था नही तो बहू या बेटे नौकर की बात करती थी पर भ० दादा कहते थे "करतूत पशु की मनुष्य की जान लोक पचारा करे दिन रात।"

वह बहुत दुखी होकर शान्त बैठ जाती थी। भगवान दादा को डबल त्याग अच्छा लगता था कि अपना भी मोह

न रहे सामने वाले का भी मोह न रहे दादा ने अपना मोह भी काटा अगले का भी मोह काटा। दादा भगवान ये वचन बोलते थे कि घर वालो का मोह सात चमड़ी की अंदर छिपा रहता है। दादा भगवान इतने नशे में रहते थे कि पत्नी से एक कमरे में रहते हुये भी बेखबर रहते थे पन्द्रह दिन पत्नी अपने मायके चली जाती तो उनको पता तक नही चलता इतना भी नही पूछते कि कहां गई कब आयेगी या नहीं उससे कोई सम्बन्ध नही था। पत्नी सारी उम्र दुखी रही पर अंत में भगवान के रूप में जान पहचान और पछताया अपनी गलती पर बोली। शरीर करके आप को देखा विकार देखा तो माफ कर दो फिर भगवान दादा की आरती किया। ❐

''भगवान दादा की इच्छा के दुश्मन''

भगवान दादा इच्छा के दुश्मन थे किसी भी भक्त की इच्छा पूरी नही करते थे इच्छा शब्द उनको पसन्द नही आता था हमेशा उनका वचन था इच्छा का तू घोट गला इच्छा है ऐसी बली जो घुमाती है गली–2 मचाती है खलबली इससे तो है मौत भली ''इच्छा मात्रम अविद्या'' गुरू बताता है ये विद्या

''चाह गयी चिंता मिटी मन हुआ बेपरवाह
जिस जीव को चाह नही सो शाहो का शाहा''।

❐

"इच्छा काटना"

दादा भगवान कभी–कभी दो लड़कियों को प्रेमी बगीचे में ले जाते एक को सेब खिलाते एक को नही तो उसके अन्दर छिपी इच्छा निकल आती उसको ज्ञान मिल जाता ऐसी समझ करते जैसे इच्छा बची ही नही दादा भगवान कहते तुम यहां सेब खाने आये हो ज्ञान सुनने एक मुख अपना क्यों नही समझा इस तरह विशालता में लेकर आते थे। एक बार भगवान के साथ पिकनिक पर हरी राम नाम का भक्त व कई अन्य भक्त भी चले। ज्ञान यज्ञ शुरू हुआ और हर प्रेमी ज्ञान में झूम रहा था दोपहर का भोजन पाया सबने। शाम को हरी राम ने दादा भगवान का अन्य प्रेमियों से चाय के लिये प्रेम भरा आग्रह किया लेकिन दादा भगवान ज्ञान में लीन थे और सब भक्तों ने भी न कर दी हरी राम अपनी इच्छा को रोक न सका। चाय पीने के लिए चला गया। उसके जाने के बाद भगवान भक्तों के साथ शरणागति लौट आये। हरी राम जब लौटे तब भगवान को भी अन्तर्धान पाकर बहुत दुखी हो गये और अपनी इच्छा पर रोया कि चाय की चाह ने भगवान से दूर कर दिया कहने लगा आज इच्छा पूरी न करता तो भगवान से दूर न होता।

भगवान दादा की कीर्ति से दूर रहना

भगवान दादा को कीर्ति पसन्द न आयी कामिनी कंचन कीर्ति तीनों ही रूकावट है ऐसा जानते और हमेशा कहा करते Majority consists of fools.

ज्यादा आदमी इकठ्ठा होते है तो वे वेवकूफ है इसलिए जब ज्यादा भीड़ जो जाती तो कभी–2 सत्संग ही बन्द कर देते कि कभी शांत में बैठते कभी गालियां देते कि सच्चे बैठे और झूठे भाग जाय दादा भगवान से कोई कहता था कि आपका दर्शन करना है तो कहते नाक का, मुख का, कान का, किसका दर्शन ऐसे वचन कहते कि कहने वाला अपने आत्मा खड़ा हो जाय कभी कोई कहता दादा भगवान हम आपके कपड़े पहन लेगें को हमे ज्ञान हो जायेगा क्योंकि आप के कपड़े में भी Vibration है। भगवान दादा कहते कॉश ऐसा होता तो हम अपनी चमड़ी के कपड़े सिलाकर दे देता लेकिन मेरी चमड़ी का कपड़ा सिलकर पहन लोगें तो भी ज्ञान नही मिलेगा। जब तक अपने को नही पहचाना।

जो जो जाने विस सदा सुख होय।

कभी कोई सत्संग आकर कहती दादा देखो इतने लोग बन गये है बहुत लोग सत्संग सुनने लगे है जब वहां

चली जाती तो भगवान कहते बेचारी कीर्ति में खुश हो गयी है कीर्ति कहर का घर है ऐसा जानते है फूल हर फोटो निकलवाना सबके खिलाफ थे कहते फूल पर पैसा क्यों गवांते हो, दादा भगवान हमेशा कहते दादा भगवान ''माया त्यागी तो क्या हुआ जो मान ना तजा जाय।'' संत, साधू, माया तो त्याग देते पर कीर्ति की सूक्ष्म वासना पड़ी रहती है इस वसन के कारण फिर माया को भी ले लेते है शिष्य आश्रम बनाने में लग जाते है अपने को फेमस कराते है। अपना त्याग वैराग्य सारी दुनियां को प्रगट करके दिखलाते है जैसे एक संत के आश्रम में तो देखा उनके आश्रम में बहुत मिठाइंया, फल पड़ी थी संत कहने लगा ये मेरी तपस्या का फल मुक्ति है या सांसारिक पदार्थ ब्रम्ह ज्ञानी का तो जन्म ही दिव्य है, कर्म भी दिव्य है, लोग उसको नही पहचानते पर श्रृद्धालु सच का अमर फल लेकर अमृत पान करते है, कामिनी कंचन कीर्ति तीनों ही Just बोलते थे Just for fame, Just for gold & Just for sex desire. ❐

''दादा भगवान सदैव गम्भीरता व मौन में रहते थे''

भगवान सदैव सागर जैसी गम्भीरता, मौन शांत वैराग्य में रहते थे खुद कहते थे ''पाया कहे सो मसखरा खोया कहे सोमूढ़ पर पाया खोया कुछ नहीं ज्यों का त्यों भरपूर'' अल्लाह लहू तो का कहू तो का उपकार भक्तो का सुख देखकर कहते तुम जितनी खुशी में हो मैं नहीं यही तो वैराग्य की पूर्ण अवस्था थी। गम से ऊपर थे इन्द्रियां आनन्द में खुश बाहरी खुशी में था खुश होना बैराग्य निर्दोष है वैराग्य में सच्चा आनन्द है सब दुखन का मूल है मन चंचलता मांहि किसी भक्त ने कहा अपका पत्र पाकर खुशी हुई तो दादा भगवान ने उस पत्र द्वारा जाग्रत करते तो पत्र न पाने में रंज भी होगा यहां भगवान ने इंद्रियां, अतीत, आनन्द की ओर इशारा किया इनकी करूणा का क्या कहना कि कही कोई आत्म धन की खुशी छोड़कर छोटी सी खुशी में खुश न हो जाय उनको मौन इतना प्रिय था जो अखबार लेकर बैठ जाते ताकि कोई अपना व्यर्थ बात करके अपना और अपना समय न गंवाये नही मूर्ख लोग भगवान को अखबार पढ़ते देखकर उनकी कापी करते पर भगवान तो अपने ही आनन्द में रहते थे कभी

संयोग वश पिकनिक या सैर करने जाते थे तो अपनी कापी पेन ले जाते और एक एक प्वाइंट का पूर्ण आनन्द लेते। ज्ञानी की प्वाइंट का टिकट पर लिखकर रखते अंदर मौन में ज्ञान ही था और आकाश के सदृश्य खाली थे। ❒

''भगवान दादा की निर्भयता और नम्रता''

भगवान दादा की यह एक आलौकिक खुदाई निर्भयता थी कि जब स्त्रियां पूरे बन्धन में थी उन्हें ज्ञान सुनने में संकोच न हुआ गृहस्थ में रहते यह उनकी अलौकिक शक्ति थी कि उन्हें भगवान जाना गया। संत साधू को भगवान कहना सरल है पर साधारण वेस में गृहस्थी को भगवान कहना क्या आसान था?भगवान दादा अनेकों रूकावटों के बावजूद स्त्रियों का उद्धार करते थे। निसकाम संत्सग के लिये कोई आश्रम मठ मन्दिर बनवाने की जरूरत न समझ कर भगवान दादा ने यह ज्ञान बगीचों, बागों, नदियों के किनारे, जंगलों में देना प्रारम्भ किया भगवान दादा को यह सपने मे भी नही लगता था कि लोग मुझें क्या कहेगें वो तो ज्ञान चर्चा करते रहते पर लोग कैसे भगवान को कलंक लगाते नही पहचानतें लोक लज्जा को त्याग कर जान हथेली पर रखकर स्त्री उद्धार में लगे। धन्य है भगवान की हिम्मत, बड़ी हिम्मत से सबको महाबलेश्वर, मैथरान और कई स्थानों पर लेकर जाते थे। निसकाम थे इसलिये निर्भयता आ गई थी। ''भय काहूँ को देत नही नही भय मानत आन कहुँ नानक सुनरे मान ज्ञानी ताहीं बखानी बोलते थे।'' why fare wihy i am here

निराकार का विश्वासी कभी पराधीन नही होता है वे सबकों निर्भय करते थे एक दिन किसी ने कहा कि भगवान लोग कहते है कि हम आप का आग लगाकर जला देंगे क्योंकि जो भी ज्ञान सुनता था उसको वैराग्य आ जाता था तो लोगों को वैरागी अच्छा नहीं लगता था तो दादा भगवान ने कहा हमनें लोहे की ड्रेस पहनी है आग क्या करेगी? सच का नगाड़ा बजाते चलो,

डरो नही जहां सच है वहां डर नही।

जहां झूठ है वहीं ही डर है।

एक बार बगीचे में सत्संग कर रहे थे तो एक आदमी ने गुस्से में आकर उनके ऊपर मिट्टी का गमला फेंका परन्तु भगवान बेपरवाह होकर बैठे किसी को चोट न आयी कई लोग धमकियां देते थे दादा नीचे उतरे तो सूट करेंगें परन्तु भगवान बेपरवाह होकर सत्संग करते थे किसी भी आगे जाने की हिम्मत नही होती थी पीठ पीछे शोर मचाते पर सामने कोई नही आ सकता था एक बार भगवान पूना में थे जैसे ही सत्संग से निकले एक आदमी ने दादा भगवान को छाते से मारना चाहा परन्तु उसी समय भगवान दादा ने शोर मचाया पुलिस आ गयी कारण था कि उसकी लड़ाई सत्संग में आती थी वैराग्य में रहती थी

शादी नही करती थी जब पुलिस ने पूछा कि तुम्हारी लड़की की उम्र कितनी है तो उसने बताया कि बाइस–तेइस वर्ष की है तो पुलिस ने कहा वह लड़की अपनी तरह से जवान हो गयी है अपना भला बुरा जानती है तुम अभी जाओ इस घटना के बाद वह आदमी बहुत बीमार हो गया और उसकी एक लड़का था उसकी भी शादी नही होती थी उसने भी भगवान से मांफी मांगी तब उसके लड़के की शादी हुई और वह भी ठीक हुआ घर बुलाकर उसने सत्संग कराया। कितनी भी तकलीफे रास्ते में आयी भगवान बेपरवाह बादशाह होकर निष्काम कर्म करते रहते।

दादा ने निर्भय थे इसलिए किसी को बनाने के लिए चीखा भी बोलते गाली भी देते ताकि उनके अन्दर का रोग निकले जैसे डाक्टर को मरीज का रोग निकालने में कितनी हिम्मत करनी पड़ती है सर्जन ही आपरेशन कर सकता है। साधारण आदमी नही। इस तरहा साधारण मनुष्य व संत साधू गाली नही दे सकता ब्रम्ह ज्ञानी ही गाली देकर मन का मौत करता है और शुभ अशुभ शब्दों से ऊपर करता है और अशब्दी ब्रम्हपद में टिका देता है।

आत्मा रूपी निर्मयता और तन मन से प्रेम नम्रता की

बच्चे के सहश रबड़ की तरह मुड़ जाते कोई कहता उठो बैठो, खाना खाइये या सत्संग करिये या बंद करिये मौन शांत गम्भीरता में मुड़ जाते ब्रम्ह ज्ञानी ऊँचे ते ऊँचा मन अपने है सबसे नीचा। इतनी नम्रता में थे तब तो उनको प्यार कर सके। निर्भयता के साथ–2 नम्रता 1– फिर भी आंनद आनंद वृक्ष की डाली जितनी फलों से लद जाती है उतनी झुक जाती है।

एक बार एक प्रेमी ने कहा कि भगवान मुझे मन आता है। तो भगवान ने कहा मैने 40 वर्ष से ज्ञान सुना है मुझे भी मन आता है फिर क्या हुआ तू तो साक्षी दृष्टता है उसके दिल में ताकत आ गई वो मनोमय सृष्टि से ऊपर उठ गयें।

❐

''भगवान दादा की निष्कामता''

परमपूज्य भगवान दादा का जीवन–सदैव निष्काम मे रहे। अपना सर्वस्व सबको भेट कर दिया। भगवान कहते कि अगर दान करना है तो अपना सर्वस्व ही दान करों। अपने तन का, मन का, धन का दूजों को जो दे दान रे वह सच्चा इंसान इस धरती का भगवान है उनको हमेशा करूणा रहती थी कि एक–एक घडी सर्व के हित मे गुजरे दादा भगवान कभी दुकान से Dry fruits लाते थें तो कोई पूछता था कि आप किसके लिये ले जा रहें है, तो भगवान तुरन्त कहते कि तुम्हारे लिये और खोल कर उसे प्रेम से खिलाते।

''पहले दाता गुरू भया, जो देवें ब्रम्ह ज्ञान।
''पीछे दाता शिष्य भया जो अर्पे तन मन्प्राण।।

दादा जी सबको Picnic पर ले जाते और खिलाते उनको कहते तुम लोग कुछ नही लेकर आना सिर्फ अपने को लाना और खुद उनको घर से खिलाते चाहे खुद के लिये बचे न बचे। परवाह ना करते। उनके घर में जब भगत प्रेमी आते उनको चांदी के बर्तनों मे खाना खिलाते जैसे बड़े आदमी आये है। घर वाले बहुत जलते थे, कहते थे जिन्होनें कभी स्टील के बर्तन में नही खाया उन्हें तुम

चाँदी के बर्तनों में खिला रहे हो। भगवान सब सत्संगियों से कहते थे तुम सब हमारे दामाद हो क्योंकि हमने अपनी बेटी (ब्रम्हविद्या) तुम्हें दी है।

इतनी कुर्बानी जो सुबह कल्याण के लिए निकलते और शाम को वापस आ जाते। ट्रेनों मे बसों में धक्के खाते सबको ज्ञान देना कभी प्रेरणा हुई कोई प्रेमी याद करता तो कर्म फुलका थाली में छोड़ आते और वहां पहुँच जाते। दिल में इतना प्यार कि सबको तृप्त करें।

I may die that you may live.

उन्होंने कभी कितनी जगह पर जाकर करके दिखाया कितने ऐसे मरीज जो जिनके पास घर वाले भी जाने में हिचकते थे तो दादा भगवान और प्रेमी जाकर सेवा करते। किसी विधवा को देखकर उनका दिल भर जाता कि उसे हर तरह से तृप्त करें। कभी किताब लेकर बैठते तो कोई पूछता कि भगवान आपको किताब से क्या मिलता है। भगवान कहते तुम्हारे लिए Points ढूढ़ता हूँ कि कैसे इसको Point सुनाऊ जो अज्ञान निवारण हो जाये।

दादा खुद दिन को भी 3 बजे उठ जाते थे चाय पीकर कापी लेकर सत्संग के लिये बैठ जाते उनके कमरे मे जो सोते थे समझते थे दादा अभी तो सोये है और दादा

भगवान उठ खड़े हुये, पर दादा तो निष्काम निराकार जागन्दी ज्योति उसमें आलस्य कहाँ?

निर अहंकार इतने कि सबको कहते कि हमको तू कहकर बुलाओं और समय पर कहते मै सब कुछ तुम्हारे से ही सीखा हूँ। उनके प्रेम से कइयों को जीवन मिला आज जो भी सत्संग की महिमा है वो दादा भगवान की कुर्बानी का फल है उनका मोटो था दुख ही दुख है सुख लेने में सच्चा सुख है सुख देने में

To give is to live दादा भगवान कहते थे

I want to be happy but I won't be happy till I make you happy too. Life is worth living when I am worth giving why can't I give same to you.

❐

"दादा भगवान की निर्मानता"

अगर जीवन दे सकते हो तो क्यो न तुमको देकर तृप्त करें।

जीना उस का जीना है जो दूजों के लिए जिये

कभी वक्त पर देखते कि मैथारन में बंगले में गंदगी पड़ी होने पर स्वयं झाडू लगाकर साफ कर देते भक्तों को शर्म आ जाती कि हम तो सारा समय घर वालों पर ही order करते है स्त्री से पानी का गिलास, कपड़े, खाना सब order करके लेते है और ये इतना बड़ा गुरू होकर भी झाडू लगाये, बस भगवान का जीवन उनके अहंकार को चूर–2 करके देह अध्यास मिटा देता और ये आदर्श लेकर खुद भी अपना जीवन इसी तरह बनाने में लग जाते, कभी कोई कपड़े धोना तो दादा भगवान उनके कपड़े सुखा देते। समय पर किसी प्रेमी का बाथरूम लैट्रिन भी उठाने में भी उन्हें संकोच ना हुआ अपना आप जानकर पूर्ण रूप से सेवा की। सब्जियां फल लाना और सबको काट कर खिलाना माना हर प्रकार की सेवा करते थे। 75 वर्ष तक जवानों की तरह ट्रेन में बस में दूर–2 जाते कभी एक दिन में चार लम्बे–2 सफर करना ट्रेन की भीड़ में कहते आओं सब

आओं आज मेरे बेटे की शादी है। हमेशा कहते I am eighty years young. भगवत गीता उनको बहुत प्रिय थी एक–2 लोक का सूक्ष्म अर्थ निकालकर रस सबकों पिलाते सबको जब मैथारन या हरिद्वार आदि स्थानों में ले जाते तो एक दिन एक डाक्टर ने सवाल किया आपको भय नही लगता कोई रास्ते में मर जाय और कोई तकलीफ आ जाय, दादा भगवान कहते हम निष्पाप है निष्काय में कोई उल्टा फल रूप दोश नही निकलेगा और ऐसे कई खेल भी हुये पर कुछ नुकसान न हुआ एक बार भगवान कुछ भक्तों को साथ लेकर नैनीताल पार्क गये एक जगह बैठे जहां छाते जैसी शेड बनी थी सब वही बैठ गये अचानक देखा तो उस शेड पर एक सांप था और सब अन्दर में घबरा गये तब दादा भगवान ने धीरज देकर कहा तुम सब शान्त से बैठो हम किसी को ये नही सतायेगा हम सबका कोई कुछ नही कर सकता और सचमुच कुछ समय बाद सांप उतरकर चला गया।

एक बार भगवान हरिद्वार गये थे वहां दो लड़कियां डूब गई तो उनको भी लोग बचाकर लाये दादा भगवान शांत में बैठे थे निश्कामी फल की इच्छा से रहित है तो प्राकृतिक भी उसको साथ देती है। मौसम भी उसका साथ

देता हैं, वायु भी उसके कदम चूमती है। सभी देवता उसके आगे सिर झुका कर खड़े हो जाते है। जैसे सूप में चमाच पड़ा है। तो चमाच को कोई रस नही आता ऐसे अनेको का उद्वार करके कहते कि तुमने अपने ऊपर कृपा की है। अपने को हमेशा छुपाना ही उनकी निष्कामता है विधवाओं को भगवान ने अपने प्रेम से त्याग से उठाया वे आज अपना जीवन धन्य मानकर भगवान के गुण गान करती है। निर्बलों को बल दिया कमजोरों को शक्ति दी नर से नारायण बनाने वाला कलाकार से कैंसर बनाने वाला मेरा सदगुरू है। दादा भगवान कहते निष्काम और कर्म नही होगा जिसका नाम कर्म है वह निष्काम न होगा जो बोलता है कि मैने निष्काम कार्य किया वह कर्तापने से बोलता है तभी बीमारी भी आती है वह निष्काम कर्म हुआ ही नही जहां मै आती है ये ही सब रोग है। दादा भगवान उस स्थिति में थे जहां कोई आवाज नही पूर्ण मौन का साम्राज्य था। ❒

"भगवान दादा के पूर्ण निष्कामता के उदाहरण"

एक स्त्री को शरीर में तकलीफ थी वह भगवान के पास मैथारन में गई थी और शौच क्रिया के लिए कमोड का इस्तेमाल करती थी एक दिन जमादार नही आया कमोड़ साफ नही था दादा भगवान ने वह कमोड़ साफ कर दिया सब गुरू शिष्य की सेवा तन, मन, धन से लेते है परन्तु इधर भगवान ने अपने मुख से पैदा किये बच्चों पर तन मन धन वार दिया और अपने संसारी बच्चों पर आंख उठा कर भी न देखा जब सब लोग भगवान के साथ सैर करने जाते तो कोई थक जाता तो भगवान उसके पैर भी दबा देते जैस मां बच्चों की पूरी थकावट हर लेती है अगर पांव दबाने में शर्म करता तो भगवान कहते कि मै अपनों को खुश करता हूँ एक सत्संगी को कोई बीमारी थी, वह बहुत कष्ट में थी बम्बई में अपने रिस्तेदार के यहां इलाज कराने आयी थी बहुत इलाज कराया लेकिन कोई फायदा नही हुआ दादा भगवान ने उसको लेकर अस्पताल में गये वहां चार घंटे रहकर डाक्टर को दिखाया उसको दूसरे दिन से ही फायदा होने लगा वह थोडे दिन में ठीक हो गयी और बहुत शुक्रिया मानने लगी कि कही ऐसा गुरू भी होता है।

क्या जो भक्त के लिये इतनी तपस्या कर अपने को जलाकर दूसरे को रोशनी दी। ❐

"भगवान दादा का लिंक(ध्यान जोड़कर ज्ञान देना"

भगवान दादा जब किसी को पत्र लिखते तो उससे लिंक ध्यान जोड़कर उसके भीतर चले जाते फिर उसकी जरूरत के मुताबिक पत्र लिखते और पत्र लिखकर कहते अभी Post करो तो कोई बोलता भगवान पीछे Post कर देगें या अभी रात है, कल कर देंगे, बोलते थे नही अभी दादर जाकर Post कर के आओं ताकि रात को ही पत्र निकल जाये तो पत्र पूरे वक्त पर भक्त को मिलता है कभी–कभी कोई–कोई भक्त लिखता था भगवान आपका पत्र मुझे वक्त पर ना मिला होता तो मै आत्महत्या कर चुका होता। ❐

"दादा भगवान की शरीर की पुत्री"

गीता भगवान का ज्ञान में आगमन :–

हीरे की कीमत जौहरी ही जानता है हीरे की भी किस्मत होती है जब वह अच्छे जौहरी के पास चला जाता है दादा भगवान की विचित्र लीला के बावजूद उनकी पुत्री रतन गीता भगवान ने उनके ज्ञान की गहराई को जान लिया था। संतान पिता को भगवान जाने बहुत बड़ी बात है किसी भक्त ने बोला

कटोरे पे कटोरा बेटा बाप से भी ज्यादा
होशियार पूत के पांव पालने में ही दिखने लगें

गीता भगवान शादी से पहले का नाम (चन्द्रा) था अपनी भाभी को सत्संग में लेकर गये थे वह से ज्ञान का बीज ह्रदय में प्रवेश कर गया और अत्यंत मेहनत से चारों तरफ ज्ञान की फसल लहलहाने लगी। उसका फल आज सब खा रहे है दादा भगवान कहते थे ये मुझसे ज्यादा महान है माया में जाकर भी माया ने इसे नही छुआ है इस ज्ञान के आफताब से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशित हो रहा है।

❒

"जसी बुटानी को ज्ञान देना"

दादा भगवान ने जैसे ही ज्ञान लिया तो यह संकल्प किया कि यह ज्ञान स्त्रियों को दूँगा और उनको ताकत देकर मर्दो का मर्द बनाऊँगा उनका यह संकल्प पूरा हुआ एक जसी नाम की स्त्री विधवा हो गयी उसके 5 छोटे–2 बच्चे थे वह सारा दिन रोती थी कि यह कैसे पलेगे और कहती थी मेरी जिन्दगी में रोने के सिवाय क्या होगा। कभी हंसना नही निकलेगा परन्तु भगवान ने उसको ऐसा हंसाया जो हमेशा के लिय आंसू सुखा दिये उसको ज्ञान देकर प्रेमी बनाया। पहले सोचती थी बच्चे कैसे पलेगें भगवान के ज्ञान की ताकत से उनको घर छोड़ कर आती थी एक–2 बच्चे को एक रूपया देकर आती थी वे बच्चे बड़े खुश होते थे मम्मी सत्संग में जाये हम पूड़ी पकौड़ा खायेगें आज वो ही फारेन में रहती है और खुद ज्ञान भी सुनाती है। ❒

"दादा भगवान का बड़ी उम्र वालों से प्रेम"

भगवान को बड़ी उम्र वालों से भी बहुत प्रेम था करूणा होती थी कि उनकी हर भावना पूरी करे जिससे उनमें कोई वासना न रहे लखनऊ में दादी पुनवानी नाम की प्रेमी थी उन्हे इच्छा हुई कि हम दादा के साथ Hill Station जायें। दादा ने कहा पहले इसकी टिकट आयेगी फिर मेरी भगवान ने उसे प्रेम करके घुमाकर तृप्त किया वो भी प्रेम में जवान हो गई अब भी भगवान के गुन गाती है उसको पूरा ग्रन्थ कंठस्थ था पर अर्थ भगवान से समझा। भगवान वृद्धों को कहते थे "गुरू मुख कदी बूढ़ा ना होय।" भगवान दादा एक बार बुढ्ढा मंडल में गये उनको बताया कि गीता पढ़गे समझेगे तो बुढापे मौत से छूट जायेगे। एक बूढ़ा बरेली में खास दादा भगवान का ज्ञान सुनने आता था उसको दमें की तकलीफ थी परन्तु वह राज भगवान के मुख से ब्रम्ह सुनने आता था। भगवान कहते कि तू ब्रम्ह है तो सब भूलकर अखण्ड आनंद में आ जाता कभी भगवान को बाहर से सत्संग करके लौटने में देरी हो जाती तो भी वह बूढ़ा बैठा रहता और भगवान के मुख से सुनकर ही ब्रह्मा ही जाता भगवान के आने से पहले कुछ भक्त आपस में सत्संग करते थे और उनकों कहते थे तुम बाहर क्यो

देखते हो ?ज्ञान सुनो ज्ञान से मतलब रखो पानी तो पानी है चाहे किसी भी मुख से आये गाय शेर के मुख से आयें। तो भी वह बूढ़ा कहता था ब्रम्ह ज्ञानी के मुख से निकल हुआ वचन बंदूक की गोली की तरह आर पार हो जाता है "गुरू मुख नाम जपे इक बार।"

फिर वह बूढ़ा जब बहुत बीमार हो गया तो भगवान उसके घर जाकर ज्ञान सुनाते थे और अंत समय जब उसने भगवान को पुकारा तो भगवान बोरीवली में थे चाय तैयार थी एक दम दादा भगवान ने कहा चलो उस बूढ़े के पास चलते है बस चाय आधे में छोड़कर पूरे समय पर उनके पास पहुँचे ऊं की ध्वनि में उनका शरीर शांत हुआ अन्त समय भगवान का दर्शन कर अर्न्तमुख हो गया और मुक्त हो गया। ❐

''चन्दनी को ज्ञान''

एक लड़की शादी के 6 महीने बाद ही विधवा हो गयी वह बहुत रोती थी विस्तर पर पड़ गयी बीमार हो गयी ना कुछ खाती न पीती थी वह वापस आयेगा ऐसे समय में दादा भगवान उनके पास गये वह कहती थी मै उनकी मूर्ति सोने की बनवाकर रखूगी पूजा करूंगी वह जरूर वापस आयेगा। भगवान ने उसको बहुत प्यार किया ज्ञान सुनाया प्यार से खिलाया पिलाया। उसे जो भ्रम था कि पति वापस आयेगा वह निकाला बताया कि भगवान ही सब का पति परमात्मा है। धीरे–2 सब ठीक हो गया। उसको भगवान अपने साथ मैथरान आदि जगहों पर भी लेके जाते चंदनी ठीक हो गई पर जोड़ो की तकलीफ रह गयी। वह कहती थी भगवान मेरा ये दर्द भी ठीक करें। भगवान कहते नही मैने ये तुम्हें gift दिया है ताकि तू घर में ही बैठी रह और मै भी तुम्हारे पास आऊँगा। तू ठीक होगी तो रोलेगी मिलेगी तो मै आऊँगा और तू नही मिलेगी। संसार में धक्के खाने से बचने के लिये यह तकलीफ gift समझ कर रखना। भगवान उसको बहुत प्यार करते उसका कमोड साफ करते और हर दीवाली पर वह भगवान के इंतजार में बैठती और भगवान जरूर उसके पास जाते। एक दिन भगवान

चंदनी को लेकर कहीं ज्ञान सुनाने गये। वहाँ रास्ते में चंदनी को कहा Apple खाओं वह बोली रास्ते में कैसे खाऊं अच्छा नही लगता फिर बोली छुरी नही है काटने के सिवाय कैसे खाऊं ऐसे करके वापस घर में आ गई जब घर आई तो बोली अब सब मिलकर Apple खाते है भगवान ने कहा कि उसी जगह खान है जहाँ नो किया था और बिना काटे खाना फिर वहाँ ही जाकर खिलाया ऐसे भगवान मन की जिद्ध का स्वाभाव बदलते थे। ❒

"भगवान दादा का राजा (लखनऊ) को ज्ञान देना"

भगवान दादा को बीमारों पर बहत करूणा आती थी कि इन्हें ऐसा ज्ञान मिले कि ये बीमार दुख तकलीफो से छूट जाये। लखनऊ के पास गोपाल खेड़ा गांव के राजा रानी भगवान का ज्ञान सुनते थे। लखनऊ में मोहन लालगंज के पास गोपाल खेड़ा नामक गांव है वहां के राजा को नीना भगवान प्रमिला भगवान सत्संग सुनाने जाते थे राजा रानी ज्ञान से बहुत खुश हो गये थे। दादा भगवान को देखकर लगा जिसकी पूजा करते थे वही साधारण रूप में आ गया। कुछ समय बाद राजा बीमार हो गया। दादा भगवान बम्बई में थे उनकी बीमारी का सुनकर भगवान को इतना प्रेम आया कि उन्होनें उसे (चिट्ठियों) पत्रों द्वारा मुक्म किया। भगवान राजा को रोज पत्र लिखते थे No sin no sickness no death in atma दादा भगवान इतना उसको दिल में रखकर चिट्ठी लिखते जो जरूरत के समय उसको मिलती और वह बड़ा खुश हो जाता। सब लखनऊ वाले उसको पत्र सुनाते रहते दादा भगवान की करूणा में वह डूब जाता और जब शरीर शांत हुआ सब सत्संगी बैठे थे हरी ओम् की ध्वनि में राजा कोमा में थे घर

वालों ने अस्पताल में भर्ती किया लगा शरीर शांत हो गया लेकिन सुबह माल ऐवन्यू में जब खबर आई तब प्रमिला भगवान नीना भगवान दादा का उसी दिन आया पत्र लेकर पहुँचे। उसमें लिखा था मै तुम्हें कब्र से निकालकर भी मुक्त कर दूंगा तू अमर अजर अविनाशी आत्मा है तू नही मरेगा शरीर छूट जायेगा। पत्र राजा ने पूरा सुना मुसकुराये फिर बोला अब मै मुक्त हूँ उसके बाद हरि ओम् की ध्वनि में हरि ओम् हो गये। और दादा भगवान की इतनी नम्रता कि सब लखनऊ वासियों को लिख दिया कि तुम सबकी कृपा से राजा का शरीर शांत हुआ। यह ब्रम्ह ज्ञानी का अकर्तापना है। सद के जाऊँ ऐसे ब्रम्हज्ञानी के ऊपर।

"दादा भगवान का गरीबों को प्यार करना"

भगवान दादा ब्रम्हज्ञानी आप परमेश्वर थे उनके लिये गरीब साहूकार सब समान है। पर गरीब जौ अपने को गिरा हुआ समझते है उनके लिये विशेष करूणा थी कि निर्बल को बल दे जिनको दुनिया तिरस्कार करती थी उन्हें दादा भरपूर प्यार देते। उन्होंने Love property पर जोर दिया उनके प्यार ने गरीब की गरीबी मिटाकर शहंशाही दी पर वह कहते कि अच्छा ही हुआ जो गरीबी की सौगात मिली जिससे परमात्मा को पाया दादा भगवान गरीबो को साहूकारों के घरों में ले जाते उन्हें हर प्रकार का अनुभव कराते कि साहूकारी क्या है गरीब भी सब ज्ञान लेकर अनुभव करने लगे अपने को राजाओं का राजा समझने लगे। जब मोटर गाड़ी आती तो दादा उनको पहले बिठाते दादा भगवान को खाने के लिये कोई बढ़ियां चीज देता तो जब वह किचन में चला जाता तो दादा जो गरीब प्रेमी सामने बैठा होता उसको खिला देते ताकि हर चीज का स्वाद लेकर इसका मन भर जाये, खट्ठा हो जाये कि स्वाद क्या है साहूकारी क्या है। कोई आकर कहता

भगवान मै नौकरी करता हूँ दादा भगवान बड़ी करूणा व प्यार से कहते नौकरी शब्द ना कहो सेवा होती है अत्यन्त कृपा कर सबको उठाते एक बार दादा भगवान आगरा गये वहां सब अच्छे घर छोड़ कर एक गरीब लड़की के घर रहे उसको बहुत हिम्मत और आनन्द मिला उसका घर ऐसा था जिसके बाथरूम में दरवाजा भी नही था चारपाई आगें रखकर दरवाजे का काम लिया जाता था। घर में किसी प्रकार की सुविधा न थी परन्तु भगवान ने उसकी दिल बड़ी करने के लिये सब कष्ट सहा ऐसा था गरीबों के लिये भगवान का प्यार वह गरीबों के मसीहा थे।

❐

"भगवान के मुख से हमेशा ज्ञान ही निकलता"

दादा भगवान से किसी ने प्रश्न किया कि सुना है ज्ञान के बाद 14 वर्ष तक मौन रहे किसी से ज्ञान चर्चा ना की दादा ने कहा मुझे 14 मिनट पहले की बात याद नही है तो 14 वर्ष पहले की क्या बताये एक बार दादा भगवान शरनागति के किचन में गये एक भक्त खाना बना रही थी उसने देखा भगवान खड़े है तो बड़े प्यार से कहा आप क्या खायेगें उसने समझा जरूर भगवान खट्ठा या मीठा भोजन कहेगें परन्तु भगवान ने झट से कहा हम तुम्हारा EGO खायेगें तो वह आश्चर्य में पड़ गई ब्रम्ह ज्ञानी 24 घंटे सच में रमण करता है और सबको भी सच में सजाग करता है।

दादा भगवान ने कहा मेरा नाम मंघनमल है मै अपने आप में मगन रहा हूँ कहते थे तुम कभी भी आइने में देखोगें तो FACE देखते ही शरीर याद आ जायेगा मैं Shaves करता हूँ 30 साल से मुझे आइना देखने की आवश्यकता नही पड़ी। ❒

"पहेलियों में ज्ञान पक्का कराना"

कभी किसी को किसी की निन्दा या स्तुति करके देखते थे कि यह आत्मा में है या देह में है जैसे जड़ भरत ने बाद के आगे रोया फिर हँसा उसका बाप Emotion आ गया। जड भरत ने कहा अभी उसका ज्ञान ही नही लगा है। क्योकि आत्मा Emotionless है इस प्रकार किसी एक भक्त का नाम सारा दिन रटते बाजू में बिठाते और दूसरे भक्त को आंख उठाकर भी नही देखते जिससे कि दूसरे भक्तों को मै ही तो हूँ का पाठ पक्का हो जाये अंदर अपने आत्मा चिंतन में आ जाये देह भाव मिट जाये ये मन की तपस्या भगवान को पसंद थी। बाहर से कुछ सघन या त्याग नही बताया पर पहले ऐसा प्यार करके सारी दुनिया से मन निकालते थे और सारी दुनिया से जब असंग और नाता दूर जाता था तब सिर्फ भगवान का ही आधार रहता था फिर पुर्ण ब्रम्ह में टिकने के लिये कठोर हो जाते एक दम देखना बोलना ज्ञान और आधार देना बंद करते और अंदर का आत्मचिन्तन द्वेत द्वेत जोकि हमेशा संस्कारों में रहता है वह खत्म होता था।

कभी देखते कोई अपने को ज्ञानी समझता है पर इच्छा से अहंकार से घूमता फिरता है समझता है मुझे माया

Touch नही करेगी तो उसकी विदेश की आई टिकट और सामान तैयार होता था। और कहते थे अभी जाकर क्या करोगे अभी जाकर टिकट कैंसिल कराओं।

कभी–2 भक्तों के साथ बाजार से गुजर रहे होते तो कहते यह चीज ले लो Sale लगी है सस्ती मिलेगी तो सच्चे भक्त के वैराग की परीक्षा हो जाती सच्चा भक्त तो यही कहता हमको पदार्थ जहर लगता है हमको कुछ नही चाहिए आपका ज्ञान ही काफी है मैथरान में एक आदमी से बोला तुम आज 10 बजे गाड़ी से बम्बई चले जाओ उसने कहा ठीक है वह उठा तो बोले 12 बजे चले जाना फिर उठा तो तीन बजे वाली गाड़ी से चले जाना जब तीन बजे तैयार हुआ तो बोले बस बैठ जाओ तुम्हारी परीक्षा हो गई कि तुमने मन को कहते कि तुम्हे घर की साड़ी पड़ी है इसी में को लाता चलो ज्ञान के लिए बाल भी ना बनाओं ऐसे देह अध्यास मिटाते। खुद भी कभी भक्तों के आग्रह पर शादी में जाना हो तो चप्पल पहनकर जाते तो एक भक्त कहता था इतनी बड़ी फेमिली के होकर इस तरह देह अध्यास मिटा सकता है बड़े हिम्मत का काम है जो पहले हीरो में राज्य करते अब पूरा देह अध्यास खत्म किया मैथरान में जब भगवान भक्तों के साथ सैर करते तो एक भक्त से

कहते एक जोड़ी चप्पल थैली में डाल कर चलो वह कहता सबको चप्पल अपनी–2 है लेने की क्या जरूरत है तो भगवान कहते नही डालो रास्ते में पैदल बहुत करनी है किसी की चप्पल फट जाये तो उसे काम आ जायेगी। एक बार भगवान शुरू–2 में घर में सत्संग कर रहे थे किसी भक्त ने किसी को बोला जाओं अंदर से केला खाकर आओं उस पर दादा भगवान ने कहा क्या तेरा घर है जो तूने खाने के लिये बोला। उस भक्त ने समझ लिया मेरे घर पर गुरू का हक है।

दादा भगवान ने एक दिन एक भक्त को कहा तो साथ चलो बगीचे में वहाँ ज्ञान चर्चा करेगे तो उसको बुखार था उसने ना कर दिया दूसरे भक्त को कहा उसे भी बुखार था वह चल दिया तो उसका बुखार उतर गया जो नही चली उसका बुखार बढ़ गया भगवान का प्रेम भक्त का तीव्र निश्चय मिलकर एक हो गया तो बुखान बचा कहाँ भाग गया भक्त भगवान को माया भी ऐसे छोड़ देती है।

❒

"दादा भगवान की नम्रता व अपने को गुप्त रखना"

दादा भगवान ने अपने को गुप्त रखकर दूसरे प्रेमियों को प्रगट किया गुरू शिष्य का भेद मिटाकर अमेदता में लाते थे। अगस्तय ऋषि के आश्रम में शेर बकरी एक साथ पानी पीते थे कारण गुरू की शेर शिवो हम की गर्जना सुनकर शिष्य जो जीव भाव की मै–2 करता था वह भी शिवोहम् की गर्जना करने लगता था कभी–2 कहते थे मुझ परमेश्वर को साधारण रूप में तुम सबने पहचान लिया ये तुम्हारी बड़ाई है। ऐसे थे मेरे दादा भगवान निर्मान निरंकारी। सच्चे मार्ग दर्शी हो कर भी अपना नाम कभी नही लिया भगवान दादा की देह विस्मृति भी अजीब सी थी देह रूपी घोड़े से अनेकों काम होते हुये भी कहते मैने कुछ नही किया 70 वर्ष की उम्र में भी वो इतने चुस्त व फुर्तीले थे कि उनके आगे आज का जवान भी शर्मा जाये। इतनी आठ–2 मील पैदल चलते तो सब भक्तों को थकावट लगती पर भगवान दादा अशरीरी थे जब मैथरान अपने प्रेमियों के साथ ले जाना होता था तब–तब खुद उनकी सेवा करते थे सब्जी, फ्रुट अनाज के बड़े–2 थैले खुद उठाकर चलते थे तो सब भक्तों को थकावट होती थी

तो कोई कहता मजदूर से उठवाये तो दादा भगवान कहते हम किसी से सेवा क्यों ले हम किसी की सेवा लेना नही चाहते। दादा भगवान की सेवा व नम्रता से कई लोग सीखते और सबकों शर्म आती कि हम लोग कैसे Order करते रहते है जो बात 100 उपदेशों से भी नही हो सकती थी वह दादा भगवान ने प्रत्यक्ष सेवा व नम्रता से उनको सिखा दी। ❐

"जकार्ता वाली सुलक्षणी को ज्ञान देना"

सुलक्षणी जकार्ता से बम्बई अपने पति के इलाज के लिये आई हुई थी उसके पति को कैंसर था। डा0 ने जवाब दिया था No Hope वह बहुत दुखी थी और अंदर ही अंदर परमात्मा को पुकरती थी। भगवान मुझे शांती दें।

भगवान दादा वहाँ पहुँचे उसको वा उसके पति को ज्ञान दिया दादा भगवान उस आदमी से बोले तू तो आत्मा है अजर अमर है काल की क्या मजाल जो मुझको छू सके उसकी सामने पूछा भगवान ये नही मरेगा। भगवान ने कहा नही ये कभी नही मरेगा ज्ञान सुनने से उसको बीमारी ही भूल गई। उसके बदन से बहुत बदबू आती थी। रिश्तेदार भी पास नही आते थे। परन्तु भगवान दादा हर रोज King Circle से कोलाबो पहुँच जाते थे और उनको ज्ञान अमृत पिलाकर शीतल करते थे। बीच में कभी प्यास लगे भूख लगे तो कभी एक गिलास पानी कभी नही पिया क्यों कि वह स्त्री खुद इतनी उल्झन में थी कि पानी का गिलास भी कभी Offer नही करती थी। भगवान उनके खाने पीने का ख्याल करते और खुद नीचे से ही बड़े बगैरह कुछ थोड़ा लेकर फिर शाम तक सत्संग करते। उस आदमी को अत्यंत पीड़ा थी जो गोलियों से भी नही उतरती थी वह

भगवान के भजन से उतर जाती थी और वह पांव से उठकर डांस करता था। एक दिन दादा भगवान का बौरी बली में सत्संग था चार बजे उनके हाथ मे चाय का कप था दो घूँट पीकर अचानक भगवान ने चाय का कप रख दिया और चप्पल पहन कर कहा चलो को लाबा एक प्रेमी ने कहा भगवान चाय तो पियो बोले नही समय कम है वहाँ से सीधे कोलाबा पहुँचे तो वह आदमी अंतिम सांस ले रहा था दादा भगवान ने उसका सिर गोद मे रखा और ओम की ध्वनि शुरू करी। ओम का महानाद शुरू हो गया। सुलक्षणी ने बताया कि इन्होंने चार बजे पूछा था दादा कहाँ है तो मैंने बोला वो बोरी वली गये है कैसे पहुँचेगें पर भगवान आप तो जानी जाननहार है। आप तो पहुँच गये ऐसे ॐ की ध्वनि में उसका शरीर शांत हो गया और मुक्ति को प्राप्त हुआ प्रेमी की पुकार पर अता जरूर हूँ वाला वायदा भगवान ने पूरा किया सुलक्षणी आज भी ज्ञानी दादी से मिलकर या स्वयं जकार्ता में सत्संग करती है उससे भी कितनों को शांति मिली है। ❐

अश्रद्धालू को तकलीफ देखनी पड़ी

एक बार दादा भगवान के पास दो बहने आती थी एक बहन की बहुत श्रद्धा थी दोनों भगवान के पास बगीचे में सुनने गई भगवान सब भक्तों को छोडकर एकांत में कुछ लिख रहे थे तो जिसको अत्यंत श्रृद्धा थी वो भगवान के पास जाकर बैठ गयी और ज्ञान सुनने लगी। दूसरी बहन ने जाकर उनके पिता को कहा ये आज अकेली दादा के साथ बैठी थी बस वह आदमी गुस्से में आ गया अपनी बेटी को छाते से मारा और दादा भगवान को पुरूष समझा। थोडे ही दिनों में उसका शरीर ऐसा फूला कि डाक्टरों को भी हैरानी हुई कि इस को क्या तकलीफ है डाक्टरों को उसकी बीमारी समझ में ना आती थी ये तो सच्ची बात थी पारब्रह्म परमेश्वर के ऊपर जो शक रखेगा उसकी क्या हालत होगी फिर सबने कहा कि तुम जब तक दादा भगवान से माँफी नहीं मांगोगे तब तक ठीक नहीं होगे, फिर जब उसने माफी माँगी तो वह ठीक होने लगा। ❐

"भगवान दादा का आसक्ति निकालना"

दादा भगवान सबकी आसक्ति निकालते थे दादा भगवान सबकों बगीचे में ले जाते थे सब खुशी से बैठ जाते। दादा भगवान देखते थे सब अटक गये है कि बगीचा बहुत सुंदर है मौज आ रही है तो उसी समय कहते उठो अब दूसरी जगह चलते है कितनों को लगता था कि अभी तो इतना थक–थक कर आराम लिया इतना मजा है यहाँ पर लेकिन भगवान को तो आसक्ति खत्म करनी होती थी।

दादा भगवान प्रमियों के साथ काश्मीर गये 8 धंटे बस में बैठकर गये वहाँ एक घंटा बैठ कर बोले अब दूसरी बस में वापस चलते है दादा भगवान ने देखा चाहा इन सबकी चित्त की वृत्ति कहां है? सृष्टि में क्या देखना है जब पांच तत्व ही है सब तरफ।

दादा भगवान को भोपाल के प्रेमी ने टेलीग्राफ देकर बुलाया था दो दिन में तृप्त करके लौट भी आये। ❐

"दादा भगवान हर बात में सजग थे"

एक दिन नेशनल पार्क में रूमाल छोड़कर आये जब खुद कुछ दूर चले तो याद आया वापस जाकर ले आये। कोई तो कहेगा ब्रम्हज्ञानी को क्यो परवाह है पर हर कर्म में सजग थे ऐसे ही क्यो चीजे गवायें ? अगर रूमाल नही लाते फिर दूसरी चिन्ता करना, खरीद लाता फिर दूसरे को Tension क्यों दे? ❐

"भगवान सबको Encourage करते थे"

एक लड़के ने ज्ञान सुना तो उसको ज्ञान सुनाने में बड़ा आनन्द आता था तो वह जब आता था दादा अपनी कुर्सी से उठकर उसको बिठाते थे तू सब को ज्ञान सुना और स्वयं नीचे बैठ जाते थे इतनी नम्रता थी और दूसरे को भी साहस देकर आगे बढ़ाते कि तुम तो बहुत होशियार हो जैसा बाप कभी बच्चे से खेलता है बच्चे के दिल को बड़ा करने के लिए अपने को हरा देता था बच्चे को जिता देता था ऐसे भगवान सबको उत्साहित करते थे कोई अच्छा भजन बोलता था तो उसको भजन गवाते थे वह खुश हो जाती थी ऐसे जो जिस बात में होशियार होता उसको और बढ़ाते थे और प्रेम प्रेम में उस के अंदर ज्ञान डाल देते थे। दादा भगवान ऐसे ज्ञान देते थे कि जैसे उनकी गर्ज है कि सब के भीतर जाग्रता आये परन्तु लेने वालों ने उनकी इतनी कदर नही करी जितनी करनी चाहिये थी भगवान का निश्चय था मै ही तो हूँ तो हमसे छिपाकर हमारे भीतर डाल देते थे। ❐

"अपने को मोड़ना"

दादा भगवान से किसी ने पूछा आप कैसे रहते है हमें तो शब्द आवाज सब सुनाई देता है दादा भगवान ने कहा असंग होकर रहो दुनिया को नही बदलो अपने को बदलो अपनी बात सुनाई कमरे में कोई बात करता है तो मुझे द्वेत की बात पसन्द नही है। मै दूसरी तरफ मुँह करके सो जाता हूँ एक कान से कम सुनाई देता था तो उसे ऊपर करके दूसरा नीचे करके सो जाता हूँ मतलब दूसरे को मौन करने को नही कहा पर खुद सुनना बंद कर दिया।

एक बार किसी ने कहा शादी में रिकार्ड बजते है नींद नही आती है दादा भगवान ने कहा उनका तो कभी–2 दिन आता है खुशी करने का, तुम तो रोज नींद करते हो उनको खुशी पूरी करने दो। भगवान दादा शरीर को अपना नही समझते थे जैसे भक्तों ने ले लिया हो भक्त जिस समय भगवान को कहते उठोगे उठ जाते एक दिन दादा भगवान ने कहा जैसे मै तुम्हारे आगे मुड़ जाता हूँ ऐसे तुम भी सृष्टि में मुड़ना सीखों जो मुड़ेगा वो जुड़ेगा। अहंकार में हस्ती लेकर नही चलना। रबड़ की तरह मुड़ जाओं दादा भगवान का आदर्श ही जीवन है। ❐

" हर समय मौज ही मौज ''''

दादा भगवान कभी–2 अपनी जीवन लीला भक्तों के कहने पर सुनाते थे तो बड़े ही आनन्द से कहते कि मैने जीवन में मजे ही मजे किये है। दादा ने जीवन को मौजमयी बना दिया था कभी अपने अनुभव में दुख की बात नही बताई। हर वक्त मौज की ही बाते बताते।

यही ब्रम्हज्ञानी से आदर्श मिलता है दुनिया में कोई भी अनुभव सनायेगा कि ऐसे दुखों से ऊपर उठा। ब्रह्मज्ञानी का जीवन हर वक्त हंसी हर वक्त खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा। ❐

"निर्मोही दादा भगवान"

एक बार जर्मनी में लड़ाई होने लगी। भगवान दादा के शरीर को लड़का भी उधर था। उस को भी गोली लगी 5,6 गोली निकल गई। परन्तु एक गोली रह गई थी और वह हिन्दुस्तान में आया यहां पर सब सम्बन्धियों ने दुख प्रगट किया पर भगवान अपना बेटा होते हुये भी (भगवान नाम रूप से अति परे थे) उससे बोले मै तुम्हे बधाई देता हूँ कि इस बहाने तुम बिस्तर पर लेटकर गीता का ज्ञान सुनो नही तो तुमको कभी काम से फुर्सत ना होती थी कि कभी बैठकर ज्ञान सुनो। कुछ सत्संगियों ने उससे मेहनत की वह तीन महीने की बजाय एक महीने में ठीक हो गया।

❐

"दादा भगवान की करूणा"

एक लड़की दूसरे शहर से भगवान के पास आई थी वह बहुत भोली थी सब कहते कि यह काम करो वह काम कर उसको सब काम नजर से देखते थे। दादा भगवान को बहुत करूणा थी उनको यह सहन ना होता था कि कोई उसको कम नजर से देखें। दादा भगवान ने उसको बुलाकर कहा तुम अपने घर जाओं जब तुमको मेरे भक्त भी आत्मा करके देखे तब तुम आना। सबने अपनी गलती महसूस की। फिर जब भी आती तो सब उसे प्यार से देखते। ❐

"अद्वैतमत"

एक बार दादा भगवान बाथरूम थे किसी ने कुंडी खटखटायी और पूछा कौन है भगवान ने कहा तू ही तो है। वह समझ गया अद्वैत का जवाब भगवान ही देख सकता है। ❒

" मौन में ज्ञान देना "

एक लड़का भगवान के पास आया उसने लिख कर दिया मुझे मौन में ज्ञान चाहिए तो भगवान ने उसकी आंखों में देखना शुरू कर दिया कुछ समय के बाद वह उठ कर चला गया कि मुझे सब कुछ मिल गया भगवान की मौन से भी बहुतों को ज्ञान मिला घर से कितनी भी विक्षेपतायें लेकर आओं उसके सामने बैठने से सब अपने आप गल कर बह जाता था। अन्दर एक अजीब ठंड़क महसूस होती थी।

❒

" निस्वार्थ ज्ञान "

एक बार भगवान दिल्ली से ज्ञान अमृत वर्षा करके जब लौट रहे थे तो स्टेशन पर बहुत लोग आये और अपने प्यार से खाने पीने का सामान भी लाये थे।

दादा भगवान ने सारा सामान उठाकर प्लेटफार्म पर फेंक दिया और बहुत जोश में बोले तु समझता है भगवान आता जाता है भगवान तो है ही । तुम लोगों ने इतने दिन क्या ज्ञान सुना तु मुझको हद में देखते हो भगवान को एक गिलास पानी भी स्वीकार ना था अपना तन मन धन सब पर लुटाया, स्वयं एक पाई भी स्वीकार नही किया। ❐

"निर्भय निराकार दादा भगवान'

एक बार एक स्त्री भक्त के पति का शरीर शांत हो गया था दादा भगवान उसके पास गये वह भगवान को देखकर बहुत हिम्मत में आ गई लेकिन उस के जो रिश्तेदार थे उन्होने दादा भगवान को नही पहचाना और बहुत शोर करने लगे कि यह मर्द होकर स्त्रियों के बीच आकर क्यों बैठा है और भी बहुत बाते की अंत में बोला ये फिर आयेगा तो हम इसे उठाकर बालकनी से फेंक देगें वह सत्संगी अंदर में डर रही थी अब क्या होगा दादा भगवान ने यह बात सुनी तो बोले चलो उसका डर तो निकालना है किसी ने कहा भगवान उसके सम्बन्धी बहुत गर्म होकर बैठे है दादा भगवान बोले देखों क्या होता है और उसके पास चले गये।

उसके घर लोग ऐसे चुप हो गये जैसे पत्थर की मूर्ति हो किसी से कुछ कहते ना बना और उस सत्संगी को बहुत हिम्मत आई। दादा भगवान ने कहा कि हम सदा ही तुम्हारे साथ है। दिल मे धीरज रखों तब वह बोली भगवान आप सचमुच भगवान हो । निराकार हो निर्बल को बल देने वाले हो उस दिन से उसके सामने कोई रूकावट नही आई।

❐

"दो स्त्रियों को आत्म साक्षात्कार कराना"

एक बार भगवान के पास दो नई–नई स्त्रियां आई थी। उन्होंने बहुत ही साधन की थी। कई संत साधुओं का संग भी किया था पर शांती ना मिली थी। आत्मा का अनुभव नही हुआ था। वे दोनो भगवान की महिमा सुनकर भगवान के पास आई थी दो चार दिन ज्ञान सुना उसको पहले ही दिन विश्वास आ गया कि सच्चा गुरू मिल गया फिर एक दिन दादा भगवान से ज्ञान सुन रही थी जब ज्ञान सुन चुकी तो एक ने पूछा भगवान व्यवहार के कैसे रहे तो दादा भगवान ने उनको बहुत गालियाँ दी और कहा तुमने इतना ज्ञान सुना फिर व्यवहार क्यों पूछा ? वह दोनो घर चल गई घर जाकर अजीब आनंद लिया तो एक दूसरों को फोन किया मुझे तो अंदर आंनद ही आंनद है दूसरी ने कहा कि मुझे भी ऐसा ही लग रहा है। भगवान दादा ने उनका अज्ञान का पर्दा हटाकर आत्मसाक्षात्कार कर दिया था सामने से लगता था कुछ नही दिया पर अंदर मालो माल कर देते थे। जैसे भगवान कृष्ण ने सुदामा को कुछ न दिया परन्तु घर पहुँचा तो माला माल हो गया था। ऐसे ही दादा भगवान की वाली से सबको आत्म साक्षात्कार हो फिर

उसी से सबको नशे में वह माया में भी आत्मपद में रहते।

❐

ओम्

"एक सन्यासी ने दादा भगवान की परीक्षा ली"

एक सन्यासी अपने साथ सुये लेकर घूमता था वह संयासी कहता था अभी मैं यह सुआ अपने पेट में डालूंगा देखता हूँ तुम्हारे भीतर क्या effect होता है दादा भगवान अपने भक्तों के साथ मैथारनमें थे तो वहाँ भी आकर उसने ये बात कही फिर वह ऐसा Action कर के वह सुआ पेट में आंखों में डाल रहा था तो सबकी Pulse fast चलने लगी सबके शरीर में Re action रहा था पर एक दादा भगवान ही थे तो भगवान ही थे तो जगत शरीर मिथ्या जाना था तो भगवान को क्या Effect होगा बस शांत पत्थर की तरह थे उसको सचमुच हैरानी लगी तो सबको मैने हिलाया था अब ये ही शांत है। ❒

"श्रद्धा वालों को ज्ञान दो अपने वालों को भी ज्ञान लग गया : श्रद्धावान लमते ज्ञानम्"

एक बार किसी प्रेमी ने दादा भगवान को कहा कि सब रूप भगवान ने धारण किये हैं हर एक भगवान है। यह बात मैने घर वालों से कही तो सब मेरे उपर हंसने लगे और अभी तो हर बात में हर वक्त कोई कहना नही मानता हैं बोलते है ही भगवान वो कौन किसकी बात मानें इस पर दादा भगवान ने बड़े प्रेम से उसको समझाया तुम सब जब यहाँ आते हो तो अंदर में भाव लेकर आते हो कि दादा हमको अच्छी एवं सच्ची बात बताता है और दूसरी बात हमारा तुम्हारा भगवान के सिवाय कोई सम्बन्ध नही है इसलिये तुमको ज्ञान समझ में आता है परन्तु जहाँ सम्बन्ध है वहाँ स्वार्थ है और वे लोग तुमसे सीखना भी नही चाहते हैं। तो क्यों उनको समझाते हो वो फिर तुमको पागल नही तो और क्या समझेगे इसी पर दादा भगवान ने बताया एक बार गीता भगवान को बोला तुम्हारे लिये उधर जगह हैं वहीं बिस्तर लगा कर सो जाओं हालांकि वह उन दिनों ज्ञान भी सुनते थे। गीता भगवान के दिल में दादा के प्रति

भगवान का भाव पैदा हो गया और ज्ञान के प्रति लगन पैदा हो गया और ज्ञान के प्रति लगन पैदा हो गयी गीता भगवान के शरीर के पति श्याम भगवान और मीरा भगवान के ऊपर भी रंग लग गया उनसे सभी को प्यार ज्ञान और आनंद मिला रहा हैं। ❒

दिल्ली में भटके हुओं को राह दिखाना

एक बार दादा भगवान जब दिल्ली में थें तो दूर –दूर से प्रेमी आकर सत्संग का लाभ लेते थे उनमें दो बहने जो बहुत दूर रहती थी सुबह 5 बजे घर से निकलती और सुबह की वाणी का रस पान करती थी उनका बड़ा भाई बहुत ही बिगड़ा हुआ इंसान था उसको जब मालूम पड़ा तो मन में बहुत गलत–गलत ख्याल करने लगा एक दिन दोनों बहनों का चोरी छिपे पीछा करते सत्संग में आ पहुँचा और चुपके से सत्संग में बैठा गया उस दिन दादा भगवान की अमृत वाणी उसके दिल को छू गयी वह अंदर ही अंदर अपने को धिक्कारने लगा घर गया तो दादा भगवान को वचन अंदर हलचल मचा रहे थे।

सारी बात उसकों नींद नही आई चार बजे उठकर सत्संग चल पड़ा रास्ते में किस बगीचे से 2 फुल तोड़ लिये सबसे पहले हाल मे और बैठा जब दादा भगवान आकर हाल में बैठे तो दोनों फूल उनके कदमों में रख दिये और नमस्कार करके कहने लगा प्रभू मुझे माफ कर दो, मैने बहुत पाप किये हैं फिर सारी अपनी आदते कह सुनायी।

दादा भगवान ने कहा ये जो तुम्हारे आंसू है वो ही सच्चे फूल है। बाकी इन चोरी के फूल लाने की क्या जरूरत थी इन बेचारों को क्यों अपने साथियों से अलग कर लाये हो।

बस उस दिन से तो उस प्रेमी का जीवन ही बदल गया। उस की मॉ की गर्मी की वजह से टांग खराब थी पर खुशी में उसकी माता ऐसी एक टांग पर नाची जो देखने लायक थी। ऐसे थे दादा भगवान पतित को पावन बनाने वाले। ❒

ओम

"भक्त करामातें देखते थे"

भगवान की सबसे बड़ी करामत थी जो जीव से ब्रह्म बनाते थे वह मन जिससे सारी दुनिया दुखी व परेशान है जो किसी के वश में नही आता ऐसे मन को मोड़ देना वश में कर देना बड़े से बड़ी करामात है भगवान की कृपा से सब की दृष्ट और अदृष्ट फल मिले। ❒

ओम

"यहाँ दो चार बातें लिखते हैं।"

एक स्त्री भक्त की बांह में बहुत दर्द था बांह उपर नही उठती थी उसने भगवान से कहा आप हाथ लगा दे तो मेरी बांह ठीक हो जायेगी दुसरी ने फिर रीस करके कहा मेरी भी बांह में दर्द होता है मुझे भी हाथ लगाओं तो भगवान ने कहा तू मंगयाणी है तुमकों क्यों हाथ लगाऊॅ मतलब कि उसे श्रद्धा ना थी और मंगयाणी का अर्थ देह अध्यास से था श्रद्धा वाला ही करामात देखता हैं एक बार एक स्त्री के घुटनों में बहुत दर्द रहता था।वह लाठी पकड़ कर चलती थी एक दिन भगवान ने उसके दोनों घुटनों पर एक–एक हाथ रखा और कहा लाठी फेंक दो सीधा होकर चलो उस दिन से वह सीधी होकर चलने लगी लाठी की फिर कभी जरूरत नही पड़ी। एक बार भगवान मथुरा मे थे उन दिनों हिन्दुस्तान पाकिस्तान की लड़ाई चल रही थी लड़ाई के कारण सब जवान बार्डर पर गये हुये थे एक लड़की जो भगवान के पास ज्ञान सुनने आती थी एक दिन कहने लगी मेरे पिता जी कहते है कि अगर तेरा गुरू भगवान है तो उसको बोलों लड़ाई बंद करे क्योंकि उसका लड़का भी Border पर गया हुआ था तो भगवान ने कहा कि मैं अभी इन्द्रा गॉधी को फोन करता हू कि लड़ाई बंद

करो तो थोड़े ही समय के बाद खबर आई वह आदमी हैरान हो गया और विश्वास हो गया वह फल की टोकरी लेकर गया तो भगवान ने कहा एक हम कुछ लेते नही अपना फल वापस लेकर जाओं नही तो हमको Taxi करके तुम्हारे घर पहुँचाना पड़ेगा। ❐

"अंदर का संकल्प विकल्प भगवान को पहुँच जाता हैं"

एक बार एक स्त्री को मालूम पड़ा उसके पड़ोस में भगवान आने वाले है उसने भगवान को देखा नही था केवल नाम सुना था तो उसने मन में संकल्प किया कि मैं आज दही बड़ा बनाऊँगी अगर वह भगवान है तो अपने आप मांग कर खायेगे तो भगवान आयें सत्संग के बाद जब दोपहर का ख.ना खाने बैठे तो बोले दही बड़ा लेकर आओ तो उस स्त्री ने कहा भगवान दही बड़ा तो नही बनाया है तो भगवान बोले पड़ोसी से लेकर आओं वह स्त्री एक दम से उठकर दही बड़े लेकर आई और उस स्त्री को भगवान में विश्वास हो गया फिर जब भगवान उससे मिलने जाते तो वह दही बड़े जरूर बनाती। ❑

ओम

" अचानक पहुँच कर मुर्दे को जीवन दान देना"

एक स्त्री अस्पताल में पड़ी थी उसके घर में सेवा करने वाला न था तो वह बहुत दुखी होती थी एक दिन उसको लगा कि मैं बचूंगी नहीं बहुत दिन हार चुकी थी उसने सोचा घर जाकर ही शरीर छोड़ना है उसकी लड़की उसको ले जाने के लिये आ गयी और सब सम्बन्धियों को टेलीग्राम कर दिया कि अब उसके बचने की आशा नही हैं। जब अस्पताल से नाम कटवा दिया और बिल्कुल घर जाने के लिये तैयार हो गयी उसी समय भगवान दादा वहाँ पहुँच गये जैसे मुर्दे को अमृत मिल गया और वह फिर से जी उठा। भगवान को देखते ही वह हंसने लगी। उसके भीतर अजीब खुशीव शक्ति भरने लगी। भगवान ने उसको जीवनदान दिया प्यार व ज्ञान दिया उसे तृप्त किया और बोले तू इधर Hospital में ही रह यह डा० नर्स सब भगवान है यह तुम्हारी अच्छी तरह से सेवा करेंगे और ऐसा कह कर फिर से उसका नाम लिखवाया। उसके बाद वह ठीक हो गयी और बहुत समय तक जीवित रही।

ओम

❑

"अचानक पहुँच कर मुर्दे को मुक्त करना"

एक बार भगवान चैम्बूर गये वहाँ सत्संग किया और एक बीमार भक्त को बुलवा भेजा और ज्ञान अमृत की वर्षा शुरू की वह भक्त अपनी बीमारी भूलकर नशे में आ गया प्रेम और ज्ञान का प्याला पीकर वह मस्त हो गया जब सत्संग पूरा हुआ कुछ प्रेमी उसको घर छोड़ कर आये और घर पहुँचते ही उसका शरीर शांत हो गया। इस प्रकार अंत में आत्मा का निश्चय करके मुक्त हो गया। ❐

"भगवान दादा अंर्तयामी घर–घर वासी"

ज्योति स्वरूप है उनके संकल्प और भावनाये पूरी करने दुख–दर्द मिटाने नया जीवन देने सारा जीवन सबकी भलाई में दे दिया दिनरात ज्ञान यज्ञ चलता हर वक्त हर एक श्रद्धालू के लिये उनका दरवाजा खुला रहता स्वयं पूर्ण ब्रहम होते भी सबकी भलाई के लिये आदर्श के लिये बैराग में रहें एक आना भी अपना सुख नही लिया उनका उठना बात करना सब भक्तों के लिये ही था अपने लिये नहीं। भगवान की तो जितनी महिमा करें उतना कम है। अशब्दी ब्रह्म को क्या गा सकोगे। ❐

"भक्त भगवान के वश में"

एक बार भगवान दूसरे शहर जा रहे थे सब सामान बंध गया था बिल्कुल जाने को तैयार थे कि एक विधवा स्त्री रोने लगी भगवान हमको छोड़कर नही जाओं मैने अभी तो ज्ञान सुना हैं मैं अभी-अभी तो संभली हूँ आप मुझको छोड़कर जा रहे हैं भगवान ने उसी वक्त Program Cancel कर दिया। भगवान के भक्त के वश में होते आयें। ❐

"भक्त की भावना पूरी करना"

एक प्रेमी सुबह का नाश्ता बनाकर भाव से भगवान के लिये बनाकर टेबुल पर बैठ गई कि अभी भगवान आयेगे। उसको पूरा विश्वास था कि मेरा संकल्प भगवान को पहूँचेगा वह अंदर ही अंदर भगवान को पुकार रही थी और इधर भगवान का सत्संग खत्म होते ही भक्त की भावना में खिचे चले गये। किसी ने कहा भगवान नाश्ता तैयार है खाकर जाईये तो भगवान ने कहा वह नाश्ता लेकर बैठी है इस प्रकार वहाँ पहुंचकर उसकी भावना पूरी की। ❐

"ज्ञान से जीवन बनाना"

भगवान का एक–एक वचन लाख–लाख रूपये का है क्योकि लाख रूपये भीजो काम ना करें वह भगवान का वचन काम करता है। एक सुपरिटेन्डेन्ट था उसकी बहुत भारी Duty थी कभी भी उसको आधी रात को बुलावा आ जाता था वह बहुत थक जाता था और तंग होता था एक दिन भगवान का वचन सुना तू घोड़े सवार है शरीर तुम्हारा घोड़ा है बस उस दिन से वह कहने लगा कि घोड़े से मैं कितना भी काम लेता हूँ यह थकता नही हैं। ❐

ओम

"शुक्राने सिखाना"

भगवान का एक वचन है कि हर हाल में शुक्राना माने एक आंख भी निकल जाये तो शुक्राना करो एक आंख तो बच गयी। अचानक एक स्त्री को कॉच लगने से एक ऑख निकल गयी तो उसको एकदम भगवान का वचन याद आया कि शुकाना करो तो ना वह रोई ना दुखी हुई और भगवान का शुक्राना करने लगी कि शुक्र है एक आंख तो बच गई। एक बार भगवान ने कहा कि तुमको सुबह–सुबह युरिन ठीक से आये तो भी शुकाना मानो तो यह बात सुनकर एक लड़का हंसने लगा कि इसमें शुकाना करने की कौन सी बात है फिर वह Dellni चला गया वहॉ जाकर उसको पथरी हो गई और यूरिन बंद हो गया वह बहुत दर्द से छटपटाने लगा जब ठीक हुआ तो भगवान को पत्र लिखकर क्षमा मांगी और शुकाना किया कि यूरिन ठीक से आता हैं। ❐

"भगवान की एक Point"

"No seen, No sickness, No death in Atma." इस लड़के को दिल से लग गई उस को एक बार बहुत बुखार आ गया अपने अंदर में निश्चय किया तो मेरे को कुछ भी नही है और नाही भगवान को दिखाना हैं। 8,10,15, दिन बीत गये पर बुखार न उतरा। घर वाले कहे डाक्टर को दिखाओं पर वह माने नही, 15 दिन के बाद सबके बहुत कहने पर डाक्टर के पास गया। डाक्टर के पास दरवाजे पर से ही लौट आये। उसने कहा मुझे अपने वचन पर पक्का रहना हैं।

"सर्व रोग का औखद नाम" घर आकर उसको संकल्प आया। गर्म पानी का सेंक करा, सेक करने से वह ठीक हो गया।

एक स्त्री बहुत चिन्ता में थी उसका काफी रू. किसी के पास था वह देना ही नही चाहता था।

उसने भगवान से Link जोड़कर पूछा भगवान क्या करे तो उसको जवाब मिला Be Still तो वह एकदम शांत हो गई और कुछ दिन के बाद वह आदमी चुपचाप रू० दे गया। ❐

ओम

जनरल को ज्ञान देना

भगवान दिल्ली में मिलिटरी एरिया में जा कर रहते थे उस एरिया में बिना परमीशन के कोई नही जा सकता था परन्तु जब भगवान वहॉ जकर रहते तो सब पहरेदार उसकी कृपा से शांत हो जाते और किसी भी भक्त को आने जाने में कोई तकलीफ ना होती भगवान का प्रेम ही ऐसा है जो सब कायदा कानून तोड़ देता है।

Only have can break the law तो वहॉ पर एक जनरल भी रहता था भगवान का ज्ञान बहुत श्रद्धा से सुनता था वह जनरल जब रास्ते से चलता था तो सब मिलिटरी मैन उसको सैल्यूट करते थे तो भगवान दादा ने जनरल को कहा कि जब ये तुमको सैल्यूट करते है तो तू बड़ा आदमी नही है परन्तु जब तुम सैल्यूट करो तब तू बड़ा आदमी है। ❐

"आंखो के डा० को ज्ञान देना"

एक बार भगवान आंखों के बड़े से बड़े डा० के पास गये तो उस डा० ने भगवान को बताया उसने हजारों की आंखों ठीक की है। भगवान ने पूछा क्या कभी ऐसा हुआ कि किसी आंख में थोड़ी रोशनी थी तुम्हारे आपरेशन करने से वह भी चली गयी हो तो उसने कहां हॉ ऐसा भी होता है कि किसी की एक आंख ठीक होती है आपरेशन करने से दोनों खराब हो जाती है तो भगवान ने कहा कि उसको सूरदास भी तुम्हीं ने बनाया है यह बात सुनते ही डाक्टर हैरान हो गया और कहने लगा ऐसी बात हमने कभी ना सुनी ना सोची अभी मुझे विश्वास आ गया कि भगवान ही करन करावन है मै कुछ भी नही हूँ। ❒

"बीमारी के समय"

इस प्रकार 30,35 वर्ष लगातार यह ज्ञान यज्ञ चलता रहा। भगवान ने अपने को छिपा के रखा प्रकट नही होने दिया ना कोई नाम ना आश्रम ना पुस्तक ना चिन्ह, ना अखबार से बात निकालना, ना किसी से पाई पैसा लिया, न कभी Public में लेक्चर किया। अपने को बिल्कुल छिपाकर रखा तो भी वह छिप ना सके उनका ज्ञान उनका प्रकाश संसार में चारों दिशाओं में फैल गया सूर्य को कौन हाथ से ढ़ँक सकता है। भगवान के ज्ञान ने हजारों को शक्ति दी। बीमारी से छुड़ाया दुखों से छुड़ाया। उनका प्रकाश घर–घर में फैल गया और धर्म की स्थापना हुई इस प्रकार ज्ञान का प्रकाश फैलाते हुये अचानक एक दिन उनके शरीर में बीमारी आ गयी। ऐसी तकलीफ हुई कि चेहरा सूजता जाता था उस बीमारी में बहुत दर्द होता है परन्तु भगवान एक दम शांत थे और उन्होंने यह भी नही कहा कि डाक्टर को बुलाओं परन्तु उनकी बिगड़ती हुई हालत को देखकर भक्तों ने डाक्टर को बुलाया डाक्टर ने आकर पुछा की आप कैसे है डाक्टर ने कहॉ I am Better than before यह बात सुनकर डा० हैरान हो गया और उनको चेक–अप करके दवाई दी। और जब भी डा० आता

कहते I am Better than before कभी बीमारी का नाम नही लिया और बाद में भी जब जो डा० उनसे श्रद्धा प्रेम रखता उनको भी कहते तुम मुझे पेशेन्ट ना समझना मैं जो हूँ सो तू हूँ। तुम मेरे पेशेन्ट हो तुम सीखने के लिए आना। जब बीमारी का समाचार भक्तो को मिला तो दूर–दूर से बहुत भक्त दर्शन करने आने लगे किसी का ख्याल था हम सेवा करेंगे परन्तु भगवान ने कहा सबको यहाँ से भेज दो हमें किसी की सेवा नही चाहिये क्योंकि भगवान पहले ही दृष्टाँत सुनाया करते थे कि एक बार एक गुरू कुये में गिर गया तो उसके शिष्य उसको निकालने आये तो उसके गुरू ने इंकार कर दिया कहा कि तुम्हारी सेवा मुझे नही चाहिए। तुमको अहंकार आ जायेगा तो सारा ज्ञान पानी हो जायेगा मुझे राह चलते कोई भी निकला देगा।

मतलब कि भगवानस ने सेवा कबूल करने से इन्कार कर दिया भगवान ने करूणा करके दो लड़कियों को सेवा के लिये रखा एक बार शरीर में तकलीफ आई तो फिर ठीक नही हुई।

पिछले 5 वर्ष ऐसा ही चलता रहा। उनकी बीमारी से भी सबने बहुत कुछ सीखा कैसे वह इतने कष्ट में भी एक रस रहते थे कैसे Bodyless हैं निरांकार ज्याति स्वरूप है

शरीर पर रोगं है पर चेहरा सूरज की तरह चमकता तकलीफ में भी वो सेवा करते रहें।

I may die that you may live का प्रत्यक्ष प्रमाण था उनके Vibrations इतने इतने Strong थे कि जो उनके पास मौन में आकर बैठवा वह Thoughtless हो जाता भगवान कहते कि यह शरीर एक दीवार है जैसे सिर को हथौड़ा लगाओं कुछ नही होता इस शरीर को भी कुछ नही होता और हम देखते है कि गर्म–गर्म Wax मे हाथ डालते थे पर उनके चेहरे पर किसी प्रकार की लकीर ना होती। भगवान बिल्कुल शांत होते और एक बात गर्मागर्म चाय उनके ऊपर गिर गयी परन्तु उनके मुख से कोई भी आवाज नही निकली वह चुपचाप उठ गये और कपड़े बदल लिये किसी भक्त ने दवाई लगाई भगवान ने शरीर को बिल्कुल भक्तों के हवाले छोड़ दिया था। वह पानी पिलाते तो वह पीते वह खाना खिलाते तो वे खाते थे जैसा भगवान को भक्त चलाते थे वैसे ही चलते थे पर अंदर में सुजाग बहुत थे जब किसी उत्तम जिज्ञासू के लिये वाणी चलाते तो उनको कोई रोक नही सकता था वो चार–2 घंटे भी बात करते भगवान को करूणा थी यह आज ही पूरी बात समझ लें शरीर से बेपरवाह भी थे। सर्व समर्थ भी

थे जैसी उनमें कोई भावना श्रद्धा रखना वैसा ही फल पाते। एक बार भगवान को किसी ने दवाई खिलाई 5 मिनट बाद दूसरी आई वह भी वह दवाई खिलाने लगी के तीसरी एकदम बोल पड़ी कि अभी तो ये दवाई पिलाई है तो वह रूक गयी परन्तु दादा भगवान एक दम मौन शान्त थे भगवान ने बीमारी के बाद कभी नमक शरीर को नही दिया क्योंकि शरीर के लिए नमक ठीक ना था। एक दादा भगवान दवाएं खा रहे थे तो एक नया भक्त आया था उसके देखा कि भगवान बड़े स्वाद से खाना खा रहे थे तो उसके मन में शंका आयी या भी तो रस लेते थे परन्तु जब उसको मालूम पड़ा खाने में नमक नहीं है तो भगवान को सब चीज में अपना रस डालते है तो अपने उपर ही शर्म आ गई।

भगवान को देखकर कितने ही अपनी तकलीफे भूल जाते है उन को भी हिम्मत आ जाती वे कहते कि भगवान के शरीर को इतना कष्ट है वह कभी कुछ नहीं कहते कैसे ये एक रस हैं तो हम भी शरीर की बात क्यों करें हम भी क्यों ना एक रस रहें। कभी कोई एक सीढ़ियो ना चढ़ सकता और नीचे से दर्शन की अभिलाषा रखता तो भगवान स्वयं इतनी तकलीफ में भी नीचे उतर कर ज्ञान

प्रेम से तृप्त करते। कभी कोई भक्त बड़ी श्रद्धा व प्रेम से भगवान को घर आने के लिये आग्रह करता तो भी भगवान उसकी भावना पूरी करते उनको कुर्सी पर बिठाकर उतारा वा चढ़ाया जाता था और कुर्सी उतारते व चढ़ाते वक्त झटका भी लगता परन्तु भगवान भक्त के लिये सब सहन करते अपने को जलाकर सबको प्रकाश दिया।

❐ ओम

''बीमारी का कारण''

कईयों को यह प्रश्न उठता कि ब्रहमज्ञानी के शरीर को कष्ट क्यों आता हैं तो वो बिल्कुल Pure एवं निर्दोष हैं। उनका तो पूरा जीवन सर्व की भलाई में जाता है शास्त्रों में ऐसा लिखा होता है कि शिष्यों की भूल शिष्यों के पाप गुरू को भोगने पड़ते है। पहले ये बात सच नही लगती थी परन्तु दादा भगवान ने अपने अनुभव से बोला कि यह सच है कि शिष्यों की गल्तियों का फल गुरू को भोगना पड़ता है और उनकी वजह से उनका शरीर खराब हुआ नही तो 75 वर्ष तक उनका शरीर बिल्कुल तन्दुरूस्त रहा फिर ऐसी तकलीफ आई कि ठीक ना हुई उसका एक खास कारण यह भी हो सकता है कि भगवान को जो शरीर करके देखता शरीर से मोह करता है उनको निराकार नही जानते। उससे ब्रह्मज्ञानी का शरीर बहुत खराब होता है भगवान का ज्ञान सुनकर ही मन सुखी हो जाता है शिष्यों का आपस में राग–देष करना ये भी भगवान के शरीर को खराब करमा है क्योकि ये सबने सुना है कि रूकमणी ने राधा को गर्म–गर्म दूध पिलाया तो कृष्ण के पांव जल गये। सत्गुरू सिख की आत्मा सिख सत्गुरू की देह। इतना करीब का सम्बन्ध है तो फिर शिष्य की गल्तियों की सजा

सत्गुरू को सहन करनी पड़ती है।

❐

"भगवान दादा का लखनऊ जाना"

फिर भगवान कुछ भक्तों के आग्रह से एक प्रेमी की पुकार से जो कि निराश और हताश हो चुका था तथा उसकी नींद वर्षो से गायब हो चुकी थी। लखनऊ एवं रूद्रपुर गये भगवान का शरीर नाजुक हो चुका था–जैसे कांच का गिलास। थोड़ा भी धक्का लगना उनके लिये ठीक न था कुछ भक्तों ने मना भी किया भगवान आज न जाओं परन्तु भगवान ने कहा कि मुझे धरती पुकार रही है। भगवान से किसी ने वादा किया था कि आप लखनऊ जरूर आयेगे तो भगवान तो भक्तों के वचनों का मान रखते थे। इस बात से हमको अनुभव होता है कि हम भगवान को कभी मजबूर न करें। उनकी रजा पर चले। कौन कहे साहब को तू यूं कह यूं ना कर। हम उनके वचनों पर मर मिटे ना कि मजबूर उनको करें। कुछ दिन लखनऊ में ज्ञान यज्ञ चला फिर भगवान रूद्रपुर चले गये वह छोटा सा गाँव है वहाँ बिजली भी पूरी नही थी। मच्छर और गर्मी पानी भी पूरे दिन न आता था। इतनी तकलीफ में भगवान वहॉ रहे वहॉ भी भक्त दूर–दूर से आते जीवन सफल बनाते रहे वहॉ भगवान की तबियत दिन पर दिन बिगड़ती चली गयी वहाँ पर अच्छे डा० का भी बन्दोबस्त

ना था। परन्तु भगवान बिल्कुल मौन व शांत थे यहॉ रूद्रपुर में भगवान के पास नाई मुलसमान बाल काटने वाला आता था। कभी–कभी भगवान आराम कर रहे होते तो वह बाहर तीन–तीन घंटे खड़ा रहता था। उसे कहते जाओ आज कुछ और काम कर आओं तो वह कहता कि पहले खुदा का दर्शन करूंगा पीछे जाऊँगा एक बार उसकी दुकान पर गये तो वह मस्ती से भजन गा रहा था जब अपने ही घर में खुदाई हैं तु अपने घर में जरूर आ जा। जात पात का तो भेद भाव नही, जहॉ सत्य है वहाँ राहत हैं।

भगवान रूद्रपुर में कम बात करते थे परन्तु उनके मौन से ही अंदर ही अंदर कितनों को ज्ञान लगता था। वह अनुभव करते थे कि हमने भगवान बात की दिन भर ज्ञान यज्ञ चलता रहा हर भक्त तृप्त होकर जाते।

एक दिन भगवान दादा आधी रात को तीन बजे उठकर भक्तों को ज्ञान सुनाने लगे इतनी गम्भीर बाणी चली गई कि सबको नशा चढ़ गया। भगवान ने कहा कि तु भगवान है भगवान से उपर क्या है ?जो तू बनना चाहता है कुछ भी बनेगा तो भगवान से कम ही होगा इस प्रकार कुछ समय तक अमृत वर्षा की। यह भगवान की अमृत वर्षा

अंतिम थी। भगवान की हालतदिन ब दिन बिगड़ती गयी। एक दिन भगवान ने कहा अपनी जो भावना हो पूरी कर लो, तो एक भक्त ने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए भगवान को नये कपड़े पहनाये। उसका संकेत सुनकर भी किसी ने समझा नही। जब हालत गंभीर हो गई तो दादा भगवान को लखनऊ लाया गया। भगवान ने एक को पहले ही लखनऊ भेज दिया था कि वहॉ गाड़ी स्टेशन पर लाए। लखनऊ लाने में दादा को बहुत कष्ट हुआ। रास्तें बहुत खराब था। बार बार गाड़ी उछलती थी जो उनके शरीर को झिझोड़ देती थी। Hearat बहुत कमजोर हो चुका था सांस लेने में बहुत दिक्कत होती थी परन्तु Oxygen का इन्तजाम न हुआ किसी प्रकार लखनऊ आ कर पहूँचे।

परन्तु आश्चर्य यह था कि भगवान शांत थे उनके फेफड़ो में खून इकट्ठा हो गया था। डा० भी हैरान था कि यह इतना शान्त कैसे है उनके वे वचन याद आये वे कहते थे तुमको आत्मा में आना मुश्किल लगता है धन्य–धन्य गुरूदेव चारों तरफ से कोटि–कोटि प्रणाम। फिर ऐसी हालत आयी कि दादा भगवान बेहोश हो गए। बाहर से बिल्कुल सुध बुध न रही सब एक दम गुम हो गये कि क्या होगा उसी समय डा० ने Injection दिया। वह

एक दम से उठकर बैठ गये और उस समय भी बह्म ही ब्रह्म की बात की यह भगवान के अंतिम शब्द थे उनकी जितनी महिमा करें तो कम ही है शरीर छोड़ते समय ब्रह्म का डंका बजाया। ❐

''धन्य–धन्य है दादा भगवान''

इस प्रकार ब्रह्म–ब्रह्म करते वे शांत हो गये और शरीर भी शांत हो गया इससे पहले कभी गीता भगवान पूछते आप कहॉ है भगवान कहते तेरे में ही है। इतनी सब लीला के साथ भगवान सारा दिन ज्ञान यज्ञ चलाते रहे। शरीर शांत होने पर दादा को बर्फ पर लिटाया गया ताकि दूर–दूर से आने वाले भक्त उनका दर्शन कर सकें। भक्तों ने अपनी भावनानुसार उन्हें फूलो से सजाया एक भक्त बताया कि उसके सिर में जबरदस्त दर्द होता है बहुत इलाज करने पर भी ठीक न होता था भगवान दादा के शरीर शांत होने पर उसने उनके पांवों की धुल लेकर लगाई तो दर्द हमेशा के लिये उतर गया।

भक्त दूर से आने लगे गीता भगवान ज्ञान यज्ञ रात दिन करते थे ओउम् की धुनि लगाते रहे। भक्त आंखों में आँसुओं का गुबार लेकर आते परन्तु भगवान ने ऐसा सत्संग किया कि किसी को भी रोने नही दिया अगर थोड़ी भी ढील किसी को रोने की हो जाती तो शायद तो शायद आँसुओं का समुद्र उमड़ जाता।

भगवान ने कहा कि रोने का क्या काम है दादा ने तुमको क्या नही दिया है वह अभी है सदा बसत हम साथ

वह तो घट–घट वासी है सर्वत्र है मतलब कि किसी को भी नीचे नही होने दिया।

लखनऊ (माल एवन्यू) में नीना प्रमिला भगवान के पास ही भगवान दादा का अंतिम संस्कार हुआ। बहुत ही भक्त पूना दिल्ली तथा दूसरों भी कई शहरों से पहुँच गये।

परन्तु दादा भगवान के शारीरिक सम्बन्धियों को भी खबर मिली पर उनमें से किसी एक को भी ट्रेन का टिकट नहीं मिला, उनमें से कोई भी नही पहूँचा यह भी निराकार का अजीब खेल हुआ भगवान भक्तों के थे तो वह कैसे पहूँचते। ''हम भक्तों के भक्त हमारे'' वाली बात सच्ची हो गयी।

जब दादा भगवान के शरीर को van की छत पर रखा जाने वाला था एक भक्त के मन में आया कि भगवान का शरीर van के अंदर रखा जाये तो उसने Driver को 10 रू0 देकर उसको मनाना चाहा कि वह उसकी बात माने परन्तु ड्राईवर ने उसको घूर कर देखा और उसकी बात नही मानी उस भक्त ने अनुभव किया कि दादा भगवान ही मुझे इस रूप में सुजाग कर रहें है। Money is useless दादा भगवान के बाद हम देख रहें है कि उनकी ही ज्योति सूरज की तरह चमक गीता भगवान के रूप में

हम सबको प्रकाश और जीवन दे रहीं है।

❒ ओम

''भक्त द्वारा दादा भगवान की महिमा''

दादा भगवान पुरूष होकर भी स्त्री के दिल को बेहद जानते और ज्ञान मे भी सोचते थे। तो कैसे उसको छुटकारा मिले, इसलिये मर्द लोगों को बहुत गाली देते थे। शरीर से ऊपर है तो क्यों नही गाली देगें। कोई तो अपना जीवन निर्वाकारी बनाके औरों की जिन्दगी बनायेगा।

दूसरा शाहूकार को भी जानते थे। तो दहेजप्रथा के लिये सिन्ध में बहुत लोग अपनी बहुको जला कर मारते थे। तो उसके मन में बहुत करूणा थी। तो जो जुल्म औरतों के ऊपर है वह कैसे भी रहे तो पुरूष वेश में भी उस हाल को जानते थे। तो दुनिया में कोई किसी को प्रेम नही करता है और खुद अज्ञान में भी उदार चिन्त होकर घूमना, खर्चना रहणी राजाओं जैसी तो सत्संग में कोई विधवा या गरीब आती थी तो उसकी दिल पिघल जाती थी उनको कैसे भी दिल का सच्चा प्यार करके उसका सब दुख दर्द दूर करके पीछे ब्रह्म ज्ञान मे ऊपर उठाऊँ। क्योंकि माया तो सबको होती है पर वो अपने बच्चों में पूरा समय देते हैं। उनकी हिम्मत थी जो कितनी ही दुखी दिल को आराम दे के बोलते थें कि हम तुम्हारे बेटे जैसे हैं। जैसा भी बोलो तो मैं तुम्हारे लिये करूगां। मैं मरूं तुम जियो। नही तो सारा

जीवन पशु समान है ऐसा निष्काम यक्ष शुरू किया जो उनका बीज फल रहा है। सबको जीना सिखाया अमर बनाया सभी को। किसी को भी मरने का दिल नही है पर जीवन बलिदान पूरी तरह कोई भी करेगा उसको जीवन मिलेगा। ❐

ओम

"दादा भगवान की दिव्यता और महिमा का श्रद्धा पूर्वक गुणगान"

देख तेरे सत्संग कि महिमा मैं हो गई

भगवान कितने भक्त बने भगवान।

दादा भगवान सच में भगवान थे, एक अनोखा प्रत्यक्ष प्रमाण हमारी आंखो के सामने है। पहली बार जब मैं शरणागति में आया आज से 11–12 साल पहले तो उस समय 10–20 व्यक्ति ही सत्संग मे आये हुये थे इसलिये दादा भगवान साधारण वेश में लगे परम पूज्यनीय नही। सत्संग में भक्तो के विशाल समूह को देखकर दादा भगवान के "निष्काम कर्म योग" महान तसस्या और आदर्श जीवन से सीखा। जैसे फूल बगीचे मे खिलता है तो अपनी महक से चारों दिशाओं को भर देता है। वैसे ही दादा भगवान के तेज और प्रेम ने श्री कृष्ण की तरह सबके ह्रदय को मुग्ध कर लिया। ऐसी महान विभूतियाँ जिसकी पहली झलक ही सबको प्रकाशित कर लेती है। साधरण वेश मुख पर ब्रह्म तेज, वाणी में स्पष्टता, उनके चेहरे की प्रसन्नता एक साक्षात उपदेश थी। दादा भगवान की प्रसन्नता का कोई अंत नही था वह एक बहते हुए झरने के

सामान थी। इस प्रसन्नता के साथ अपार प्रेम का सागर भरा था। वे करूणा निधान थे। भक्तो से उनका व्यवहार मित्रों जैसे था। कोई कैसी भी समस्या चाहे आत्मिक हो या पारिवारिक लेकर उनके पास आता तो दादा भगवान बड़ी आत्मीयता से एक सच्चे मित्र की तरह उस समस्या को सुलझा देते, कुछ ऐसे भी लोग थे जो शराबी थे। पर ज्ञान मे आने पर उन्हे भी दादा जी की दृष्टि मिलती। उन्हे सत्मार्ग पर लाने के लिये दादा जी सर्वस्व देने को तैयार हो जाते।

दादा भगवान के महान प्रभावशाली व्यक्तित्व पर मैं आशिक हो गया, एक एक सच्चे ब्रह्मज्ञानी जिसकी मुझे खोज थी मिल गये। निर्विकार, निर्मल, सरल जैसे अंदर वैसे बाहर साधारण परन्तु महान कभी कोई चमत्कार ना दिखाने वाले पर अपने आप स्वंय चमत्कार ऐसी सहज विभूति को पाकर लगा हम धन्य–धन्य हो गये।

दादा भगवान की वाणी में जादू थे। वे भक्तों के ह्रदय में भावों से उपदेश करते थे। सभी भक्त जन यही कहते थे कि दादा भगवान ने मेरी शंकाओ का समाधान किया और मेरी ही बात कर रहें हैं। हरिद्वार नैनीताल दिल्ली आदि कई स्थानों पर भक्तो को लेकर जाते वे जहाँ

जाते जंगल मे मंगल हो जाता 70–80 जनों का भोजन हमारे भगवान अपने हाथों से तथा प्रेमियों द्वारा बनवाकर सबको अपने बच्चों जैसे परोस कर खिलाते। यहाँ तक कि प्रातःकाल उठकर पानी के मटके स्वयं भरते, झाड़ू आदि की सेवा से भी न हिचकते। मैथरान में दादा भगवान के साथ वो प्यार की मधुर स्मृतियाँ भक्तों को हृदय में सदैव ताजी रहेगी। दादा भगवान एक धनी परिवार में जन्में और ऐसा कहा जाये Born with golden spoon in mouth ये बहुत ठीक होगा पढ़ने लिखने के बाद अपने पारिवारिक धन्धे हीरे जवाहरात का व्यापार संभाला पर जवानी में ही भीतर वैराग्य वृत्ति होती रही। यह संसार फिर उनको ब्रह्मज्ञानी गुरू लाल जी के मिलने पर स्वप्न वृत जैसा लगने लगा। जैसे जिनके हाथ में कंकड़ हो और अचानक हीरे हाथ में आ जायें। तो कंकड़ वही छोड़कर हीरे पकड़ लेता है। अब तो हर समय उनकी आंखे मस्ती में डूबी रहती उनके चेहरे पर आलौकिक नूर चमकता था। एक अजीब ईश्वरीय मस्ती थी "नाम खुमारी नानका।" भगवान अपनी श्रद्धा से नित्य नया भजन बनाकर गुरू को जाकर सुनाते थे उनकी श्रद्धा भक्ति प्रेम को देखकर गुरू देव बहुत प्रसन्न हुये और आर्शीवाद देते हुये कहा कि तू जिस

श्रद्धा, नम्रता से मुझको झुका है सारा संसार तुमको झुकेगा। यह गुरू वाक्य सत्यम् का प्रत्यक्ष प्रमाण आज हम सब अपनी आंखों से देख रहे हैं। दादा भगवान के सम्पर्क में जो एक बार आ गया उसे उन्होने प्रेम की धारा में डुबो दिया। जहॉ सबके गुरु देव थे वहीं सबके माता पिता भी थें।

दादा भगवान जैसा उदाहरण संसार में कही नही हैं। दादा जी करूणा ने शिष्य को शिष्य नही रहने दिया क्योंकि जो स्वयं सच्चिदानंद स्वरूप है, ब्रहमानंद रूप है उसका शिष्य शिष्य ही रहे यह उसका गौरव नही हैं। परन्तु वह हर एक को वही स्वरूप देना चाहता हैं जो परमात्मा स्वरूप वह स्वयं हैं।

दादा भगवान को शिष्य शब्द ही अच्छा नही लगता था शिष्य माना ही शीश जो चुमता रहे जीवन भर। ब्रह्मज्ञानी शिष्यभाव शिष्य भाव को भी शिष्य दृष्टि से निकाल देना, हटा देना जरूरी समझता है। जैसे पत्थर की मूर्ति को विधिवत् पूजन करने के बाद उसका विसर्जन भी कर देते हैं। गुरू अपना रूप देकर अहंकार का विसर्जन करा देता है। परन्तु यहॉ अदैत की बात है देह से गुरू और शिष्य में भेद जरूर

रहेगा। जैसे सागर से ही लहर उत्पन्न होती है पर लहर कभी सागर होने का अहंकार नही कर सकती और सच तो ये है कि जब तक गुरू शिष्य का अपना आप एक नहीं होता ज्ञान का सुर भी नहीं मिलता है। हाँ भगवान गुरू शिष्य का अजीब नाता है। इस समस्या का वर्णन करना एक अजीब समस्या है एक चित्रकार की कलम शमां और परवाने का चित्र तो खींच सकती है लेकिन उनके हृदय के भावों का चित्रण करना मुश्किल है। निसंदेह सब नाते अवश्य टूट जायेगे लेकिन गुरू शिष्य का सूक्ष्म नाता टूटने वाला नही गुरु अगर स्थूल शरीर छोड़ भी दे तो भी शिष्य के ह्रदय के साथ गुरू का सम्बंध बना ही रहता है।

नाम रहियो साधू रहियों रहा गुरू गोविंद
कह नानक इस जग में जिन जपयो गुरू मंत्र।

तमाम ऋषि–मुनि मंत्र वेद शास्त्र गुरू शिष्य सम्बंध करते खामोश हो गये। यह कैसा शास्वत शक्ति प्रदायक नाता है। उसकी आज्ञा पालन के आगे भक्त के जीवन का कोई मूल्य नहीं है यही एक सम्बंध है जो शिष्य में रूह फूंकता है तथा कल भी गुरु मंत्र शिष्य के घर में समा

जाता है तो अज्ञानता उसके हृदय में घूँघट उठा लेती है, तो मंज़िल पांव के नीचे आ जाती है। तब शिष्य अपने आप को कृत–कृत मासता है। हाँ भगवान यही गुरू कृपा हमें भी चाहिए।

गुरू कृपा जहि नर ते कीन्हीं
तिन ये जुगत पछानी

❑ ओम

दादा भगवान के साथ बिताए कुछ क्षणों की झांकी

दादा भगवान इस धरती पर अवतरित हुए और साधारण रूप में आकर जन्मों के भटके लोगों को ज्ञान का संबल देकर जीवन का सत्मार्ग दिखाया। हम सबके लिए ये सौभाग्य की बात है, जिन्होंने हमें सभी मायावी कीड़ों को आत्मा की भूं–भूं करके आत्मा के निश्चय में टिकाया। मुझ अकिंच को ज्ञान का दान देकर (भिखारी को) हर प्रकार की मांग से बचा लिया। तभी इस संसार रूपी बंधन से मुक्त हुई आकाश रूपी आत्मा में उड़कर सदा जीवन जीने का आनन्द ले रहे हैं। सचमुच दादा भगवान ने सबका जीवन ही बदल दिया।

वह जुबां कहाँ से लाऊँ
जिससे करूँ मैं शुक्रिया।

पहले ही दिन ऐसी आत्मीयता से मिले, अपनेपन से मिले कि लगा ही नहीं कि आज हम नये मिले हैं। दादा भगवान आँखें मूंदे हुए शांत रूप से अमृत वाणी का रस प्रेमियों को पिला रहे थे तो मेरे मन में शंका उत्पन्न हुई और शंका समाधान करने का मन हुआ तो उसी समय दादा भगवान आँख खोलकर पूछने लगे कि कोई शंका है

क्या ?कोई शंका होवे तो मुझे बीच में रोककर पूछना। मैं हैरान हो गयी कि इन्होंने मेरे अंदर की बात कैसे जान ली। फिर दादा भगवान ने ग्रंथ साहिब की वाणी का उदाहरण देकर पंक्ति सुनाकर मेरी शंका का समाधान किया तो अंदर में बहुत खुशी हुई। घर में आयी तो ऐसा लगा जैसे कोई खजाना मिल गया हों चार दिन के बाद जब फिर मिले तो पूछा हम तुम्हारे साथ में थे या नहीं तो एकदम याद आया कि हाँ हरदम मेरे साथ सामने ही खड़े थे। जब बच्चों पर जोश में आकर हाथ उठाती तो सामने खड़े होकर हाथ रोक देते थे कि भगवान नहीं देखती है। ऐसे उस दिन से जैसे विकारों से छूट गयी। भला भगवान के सामने कोई कैसे विकार कर सकता है। कुछ दिनों के बाद भगवान दादा ने Sion Garden आने का आग्रह किया। वहाँ रोज ६ से ८ तक सत्संग होता था। जब जाने लगी तो मेरे आदमी ने कहा आज मैं भी गार्डेन चलूँगा और तुम्हारे भगवान दादा का दर्शन करूँगा तथा हवा भी खाऊँगा। लेकिन वहाँ दादा भगवान को सुना तो मस्त हो गये और मन ही मन में अपना गुरू मान लिया। घर में आने की प्रार्थना की। दादा भगवान इतने दयालु व सहज थे जो बोला हाँ हम ज़रूर–ज़रूर तुम्हारे घर आएंगे और हफ्ते में

एक दिन सत्संग भी करेंगे। हम बहुत खुश होकर घर लौटे। मैंने अंदर में बोला दादा ने मेरा रास्ता बनाने के लिए Sion में बुलाया, मुझे ज्ञान देकर मुक्त किया।

ज्यों केले के पात में पात पात में पात
त्यों संतान की बात में बात बात में बात
तीन लोक नौ खण्ड में गुरू से बड़ा न कोय
करता करे न कर सके गुरू करे सो होय।
सत्गुरू मेरा सूरमा करे शब्द की चोट
मारे गोला तोप का हरे मरन की कोट

❐

ओम

दादा भगवान अंर्तरयामी

एक दिन दादा भगवान सत्संग सुनाते हुए बोले मैं सबको अपने जैसा करके दिखाता हूँ तो अंदर में शंका आयी ऐसे कैसे हो सकता है। जब अज्ञानी देखते हैं तभी तो ज्ञान सुनाते हैं लेकिन शंका मैंने सीधी न पूछकर पूछा वशिष्ठ मुनि जब रामचन्द्र को ज्ञान सुनाया था तो उसे क्या समझा था। इस सवाल पर बोले और हंसे जैसे चोरी पकड़ ली हो। यह तो मेरे से पूछ रहा है जब अज्ञानी को देखते हैं तभी तो ज्ञान सुनाते हैं, फिर बड़े प्रेम से बोले– सवाल बहुत अच्छा है अभी देखो वशिष्ठ मुनि अगर राम को अज्ञानी समझता था तो कैसे बोलता था तू ये देह नहीं है, आत्मा है ब्रह्म है। इसका मतलब है कि राम अपने को भूल गया है पर वशिष्ठ उसको भगवान करके देखता है। ऐसे मैं भी तुमको भगवान ही देखता हूँ। "तू है भगवान इसमें नहीं शक गुमान।"

दूसरी बार घर में सत्संग हो रहा था दादा भगवान बड़े प्यार से आँख मूँदकर वाणी का रस प्रेमियों को पिला रहे थे तो दो स्त्रियाँ बीच मे आकर बैठ गयीं उन दोनों स्त्रियों ने सफेद कपड़े पहने हुए थे। उसके बाद दादा भगवान ने आँख खोली और जैसे शिव रूप धारण कर

लिया खूब जोश में वाणी चली कि तुम इधर धक्के खाने क्यों आते हो । सफेद कपड़े पहनकर आते हो पर मन साफ नहीं किया। तुम हजार दरवाजे भटकने वाले हो तुम्हारा किधर भी विश्वास नहीं फिर क्यों आयी हो?तुम्हारा कुत्ते जैसा स्वभाव है भोंकना और नूस–नूस करना।

करतूत पशु की मनुष्य जात
लो पचार करें दिन रात

जैसे खूब जोश का सत्संग करके समय से पहले उठकर चले गये हम अंदर में हैरान थे कि क्या हुआ बाद में पता चला कि ये दोनों स्त्रियां ऐसे ही आयी थीं और किचन में नूस–नूस करती थीं देखूँ क्या पका है क्या खाना है, कितने बजे गुरू आया है फिर बाहर जाकर बहुत भोंकती थीं। ऐसे से भगवान दादा अंर्तयामी।

ऐसे बेपरवाह गुरू के लिए लोग बहुत बात और निन्दा करते हैं पर सच्चा गुरू निन्दा से नहीं डरता है। सच का सौदा करता है। ❐

ओम

दादा भगवान युग प्रवर्तक और महान नायक

दादा भगवान युग प्रवर्तक और महान नायक की भूमिका में खरे उतरे जो वाणी गुरू से बोली उसे जीवन में चरितार्थ किया। उनका अनुभवी ज्ञान हर उम्र वाले के लिए तथा जाति–पाति, पढ़ाई–लिखाई, सम्पन्नता–विपन्नता से परे सबके लिए था। मनुष्य धरती पर अरबों की संख्या में है। देह, आकृति, प्रकृति रंग सभी में अंतर होता है। लेकिन दादा भगवान माला के मध्य पिरोए सुत्र की तरह सबको एकत्व के बंधनों में आज भी बांधे हुए हैं।

भगवान दादा की मशाल, जो थामें है हर लाल।
ज्ञान, प्रेम, भक्ति से भरपूर,आत्मिक निश्चय की मिसाल।
सत्गुरू तुम हो मेरे कुम्हार
धन्य है माटी, धन्य है माली धन्य है ये अवतार सारा।
धन्य–धन्य दादा भगवान रोमांचित होगया सारा जन–जन

❑ ओम

दादा भगवान के मूल मंत्र

* नहीं कुछ खोया नहीं कुछ पाया
संशय मूल चुकाया।
कहे हेमा नित प्राप्त आत्मा
आत्म प्रतीत आया।

* पाया कहे सो मसखरा, खोया कहे जो झूठ
पाया खोया कुछ नही ज्यों का त्यों भरपूर

* ठिंठोंरा शहर में लड़का बगल में
खुदा है पास यह ढूढ़ें जंगल में

* मेरी आँख में छिपा था मुझे मालूम न था
कर्मी तो आवे कपड़ा न दरी मोक्ष द्वार

* तन–मन एक रस तो सिमरन कहिए सोई
राम जपत राम ही रहिया आप विसर्जन होई

* मतिजा नदी किनारे
जिसको बन–बन ढूंढे सो है पास तिहारे

* वेद पुराण में हरि तू खोजे
पढ़–पढ़कर नैन गंवाए
लाख जतन करे हरि मिले
न प्रेम करे सो पाए।

* जोत को एक जोत से
सतगुरू ने पैदा कर दिया

* जिस देख दिखावे तिसके बलि जाई।

* भूले मार्ग जिसने बतलाया
ऐसे गुरू बड़ भागी पाया।

* पूरे गुरू का सुन उपदेश
पार ब्रह्म निकट कर देख

* कांचे गुरू ते मुक्त न होई

* तुलसी जग में आए के
जिनना जानिओ ज्ञान

* खाना पीना भोगना
तिन का पशु समान।

* ज्ञान भया तो कर्म ही नाश

* कोटि कर्म बंधन के मूल
सुनिए अंधे पावे राह
श्रवण मनन निंध्यासन।

* कबीर मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर
पाछे लागा हरि फिरे कहत कबीर–कबीर

* निर्गुण सगुण आप हैं सुन समाधि आप
आपे किया नानका आप ही फिर जाप।

* एक भक्त एक भगवान है जिनके नाहि मन
नानक सूकर स्वान मानो ताहि तन।

✱ गंगा सागर में मिली तो गंगा सागर होई

✱ अपराधी घृणां निमे ज्यों हंता मृगाई
सीस नवाए क्या होवे
जो ह्रदय कुबुद्धि न जाए।

✱ खाना पीना पवित्र है
दिचु रिज़क सवाई,
नानक जिनी गुरू मुख
बूकिया तिनां सूतक नाहि

✱ लख चौरासी जूड़ सवाई,
मानुख को प्रभु दीनहि बड़याई।

✱ इस पद से जो नर चुके
आये जाए दुख पावे।

✱ श्रद्धावान लगते ज्ञानम्।

✱ जिसके अंदर विश्वास प्रभु आया
तत्व बोध तिस मन प्रगटाया।

✱ जो जाने मैं कुछ करता
तब लग गर्म जून में फिरता।

✱ उपजे चाह साध के संग

✱ गुरू बिन घोर अंधारा मति
कोई मर्म भूले संसार
गुरू बिन कोई न उतरे पार।

✱ सिर–सिर रिज़क संवाहे ठाकुर,
काहे मन भव करिया।

✱ दीन–बंधु दीनानाथ मेरी डोर तेरे हाथ।

✱ लिखया लेख ललाट का भेंट न सके कोई
मेटे तो समर्थ है, पर समझ किया है काम।

✷ हिरणाकस दुष्ट हरि मारिया
नर्सिंग रूप धरे प्रहलाज तराया।

✷ . कभी राम बन उपकारी आके अहिल्या तारी
कभी कृष्ण बनके सारी सृष्टि तरा गया।

✷ दादू सोनिया दास की
अपना नाम न ले।

✷ आप अकेले सब करे घट में लहर उठाय।

✷ तेरी रोजी तुझको ढूंढे
दिल विच कर आराम।
दाने–दाने पर लिखा
खाने वाले का नाम।

✷ मुये को प्रभु देत है कपड़ा,लकड़ी आग
जीवित नर चिन्ता करे ताकि बड़े अभाग

✷ सो साहक चिन्ता करे जिस उपाया जग।

✷ नानक करना जिन किया
तिनहीं करनी सार

✷ चिन्ता से चेहरा घटे, घटे बुद्धि और ज्ञान
नानक चिन्ता मत करो, चिंता चिता समान।

✷ हिम्मते मरदां तो मददे खुदा
बंदा बेहिम्मत तो खुदा बेज़ार।

✷ जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते है।

✷ बंदा खड़ा हो जाए तो
खुदा सो नहीं सकता
जो खुदा को ही सुला दे
वो बंदा हो नहीं सकता।

✷ चाह गयी तो चिन्ता गयी,
मन हुआ बेपरवाह
जिस जीव को चाह नहीं,
सो शाहन का शाह।

✷ तीर्थ तप और दान करे
मन में धरे गुमान
नानक निष्फल जात है
ज्यों कुंचर स्नान।

✷ दया धर्म का मूल है
नर्क मूल अभिमान
गुरू बिन कोई राह न पावे
प्रेम बिना कोई पार न पावे।

✷ अपने सुख से सब जग बांध्यो
को काहू को नाहि
प्रीतम जान लियो मन माहिं।

✷ सतगुरू सिख की आत्मा
सिख सतगुरू की देह
लखना चाही अलख को
तो उसमें ही लख लेहि।

✷ जो प्रेम नगर में रहते हैं
उनको बावरे–बावरे कहते हैं।

✷ हम आशिक उस सनम के है
जो दिलबर सबसे आला है।
जिसने हमको जी बख्शा है
और जिससे हमको पाला है।

✷ दिल उसमें भोला भाला है
मन उसमें ही मतवाला है
क्या कहिए किसके आगे
मेरी कौन समझने वाला है

✷ तेरे समर्पण कर दिया
तन मन तेरा जान के

* लाख प्याला भर पिए
चढ़े न मस्ती नैन
एक बूँद ब्रह्म ज्ञान की
मस्त करे दिन रैन

* लब पर रह जाती है
आ – आ के शिकायत तेरी
कहने देती नहीं कुछ
मुँह से मुहब्बत तेरी।

ओम

❐

स्वामी रामतीर्थ का गृहत्याग

* छोड़कर जब रामतीर्थ घर–बार को जाने लगे
नयन उनकी पत्नी के तब नीर बरसाने लगे।
उस पवित्रता ने स्वामी राम के पांव गहे
सिर को रखकर चरणों पर
ये वचन फिर उसने कहे

* जब राम ने जंगल का रास्ता लिया था
तब जानकी को भी अपने साथ लिया था
आप मेरे राम हैं और मैं हूँ सीता आपकी
साथ मुझको चलने की बस आज्ञा हो आपकी

* राम तीर्थ ने कहा मंजूर नहीं तेरी बात है
साथ ले जाता मगर तू तो औरत की जात है
तुझको अपने घर से और जेवरों से प्यार है
इसलिए मुझे तेरा ले जाने से इंकार है

* बोली तो कि आज्ञा हो तो घर जला देती हूँ मैं
बिस्तरों जेवर कहो तो सब लुटा देती हूँ मैं

❋ रामतीर्थ ने कहा नहीं मुझको स्वीकार है
सहज है कहना मगर करना बड़ा दुश्वार है

❋ सुनते ही ये बात सब बर्तन इकठ्ठे कर दिए
जेवर उतारे और बिस्तर इकठ्ठे कर दिए
खैरात के अब खोल उसने अपने सारे घर दिए
मांगने वालों के बैरागन ने पल्लू भर दिए

❋ बोली नाथ कि अब तो साथ मुझको लीजिए
साथ मुझको लीजिए और सेवा करने दीजिए
रामतीरथ ने कहा मुझको तो इंकार है
क्योंकि तुझको अपने बच्चों से अभी प्यार है

❋ इनको भला तू छोड़ेगी किस तरह
इनकी मोह ममता तोड़ेगी किस तरह
बोली कि नाथ जब नल ने–
जंगल का रास्ता लिया था
❋ दमयन्ती ने साथ चलने को जोर दिया था।

❋ उस समय नल ने भी यही बहाना किया था
तब उसने बच्चों को बाप के घर भेज दिया था
मैं भी नाथ साथ आपका ही निभाऊँगी
बच्चों को ले जाकर बाप के घर छोड़ आऊँगी

❋ राम तीरथ ने कहा, आमिल नही है तू
साथ मेरे चलने के काबिल नहीं है तू
विश्वास तेरा प्रभु में अभी बंधा ही नहीं
समझती है बाप के घर पर यहाँ तो है ही नहीं

देवी तू अब बच्चों की ममता को तोड़ दे
जो सबकी माँ है, इनका मुँह उनकी तरफ मोड़ दे
रिश्ता इनका सर्व व्यापक प्रभु से जोड़ दे
बच्चों को ले जाकर बाजार में छोड़ दे

❋ सुनते ही ये बात रंग ज़र्द हो गया
हाय रे प्रभु तू कितना बेदर्द बन गया
लेकिन उसके दिल में लगन थी ये लगी
दिखाऊँगी बन कर पिया मैं अपने राम की

ॐ

* एक बच्चों को तो उसने गोदी लगा लिया
दूसरे को ले के रूख बाज़ार का किया
छोटे बच्चे को तो एक कोने में यूँ ही सुला दिया
बड़े का हाथ उसने भीड़ में छुड़ा लिया

* बस हाल तो उसका बुरा हो गया
हिरनी का बच्चा जंगल में खो गया
आँख से उसकी आंसू की नदी बह गयी
लुटा दी थी उसने पूँजी रही सही

* आते देखा राम ने तो बस वे भी रो दिए
त्यागी ने वैरागी के नेत्र भिगो दिए
लेकिन लेने लगे इम्तिहान रहा सहा
कुछ सोचकर फिर उससे यूँ कहा

* देवी मुझे तो अभी भी इंकार है
क्योंकि तेरा अपने पति से तो प्यार है
गर वचन तू अपने मुख से ये सुनाएगी
तो साथ मेरे चलने के काबिल भी तू हो जाएगी

ॐ

* कह दे कि हाय स्वामी रामतीरथ मर गये
नाथ मुझको जीते जी ही विधवा करके चले गये
सुनते ही ये बात छुरी दिल पर चल गयी
रो रोकर हिचकियाँ उसकी बंध गयीं

* रोते ही रोते कह दिया कि स्वामी राम् तीर्थ मर गये
नाथ मुझको जीते जी ही विधवा करके चले गये
सुनते ही ये बात स्वामी रामतीरथ उछल पड़े
जिसका था ना कोई उसकी तरफ बढ़ गये

* बोले कि देवी तूने छोड़ा है दुनिया के भोग को
तूने सहन किया है पति–पुत्र के वियोग को
तेरा पति मर गया और मेरी पत्नी खो गयी
आ देवी आज से तू मेरी माता हो गयी

* हाय! तो स्वामी रामतीरथ से कहाँ गये
वो त्याग के इसार के पुतले कहाँ गये
उजड़े हुए चमन के आसार बाकी हैं
फूल तो मुर्झा गये पर अपनी खुशबू छोड़ गये

❒

ओम